श्री सुदर्शन संदेश

जून 2018

15/-

वर्ष: 16 अंक: 7

धूमधाम से मनाई बाबा की जयंती

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के संस्थापक वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की जयंती बड़ी ही धूमधाम के साथ मनाई गई। इस अवसर पर (1) परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने बाबा का पूजन किया। यहां (2–3) बाबा की समाधि स्मृति स्थल एवं आश्रम व दिव्यधाम को जोरदार रोशनियों से सजाया गया। (4–5) भक्तों ने गुरुदेव का अभिनंदन किया तो मंच पर हरियाणा के मंत्रियों श्री रामबिलास शर्मा जी एवं श्री विपुल गोयल जी ने भी प्रशस्तिगान किया। (6–7) भव्यशोभायात्रा में गुरुदेव व भक्तों ने शिरकत की। यहां विधायक ललित नागर एवं पं टेकचंद शर्मा सहित अनेक वीआईपी मौजूद रहे।

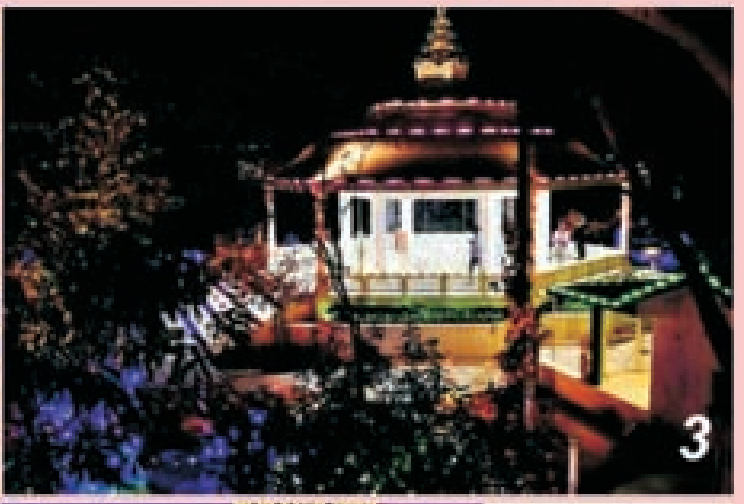

श्री सुदर्शन संदेश

वैकुंठवासी श्रीमद् जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित

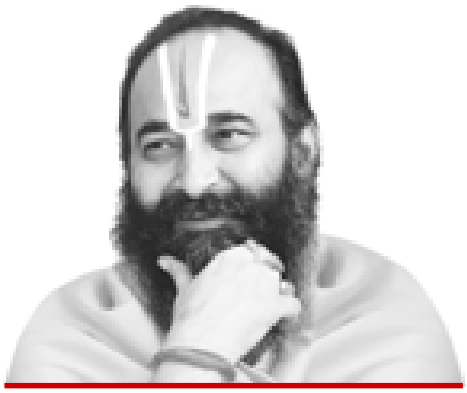

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज

प्रवचनांश

जब आप सामने वाले से उम्मीद लगाते हो तो उसकी उम्मीद भी आपके साथ जुड़ जाती है। ऐसे में दोनों पर एक दूसरे की उम्मीदों को पूरा करने का भार आ जाता है। इससे अच्छा है कि दूसरे के लिए कुछ करने का भाव रखें। इससे दोनों हलके रहेंगे।

गुरुवाणी

भगवान् की माया से तो तभी पार होगा, जबकि जाहि-जाहि करके इतरावलम्ब त्यागपूर्वक भगवान् की कृपा का अवलम्ब लेगा। जीवों में मिथ्या अहंकार घुसा है। अहंकार में पड़ के भगवत्कृपा पात्र अनुभवी सद्गुरुओं के पास जाते नहीं, अतः शास्त्रों के असली विषय का निर्णय होता नहीं। इससे यह जीव शरणागत वत्सल भगवान् की शरणागति रक्षणरूप अचूक रीति को नहीं जानकर भगवान् को छोड़ इतर साधनों में व्यर्थ पचि-पचि कर मरता है। दुनिया में ऐसा कौन अधिकारी है कि इतरावलम्ब छोड़कर भगवान् की शरणागति कर लेने के बाद माया को नहीं तर सकता है, अर्थात् अवश्य तरेगा।

-श्रीगुरूमहाराज

छायाचित्र

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के अधिपति परमपूज्य श्री गुरूमहाराज अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज श्री नारायण गौशाला में गौवंश को चारा देते हुए।

पत्रिका में अपने अनुभव व लेख संपादकीय कार्यालय को भेजें।

संपादकीय सलाहकार :
रामेश्वर सिंह, डी. सी. तंवर
संपादक : शकुन रघुवंशी (श्रीधर)*
एसोसिएट एडिटर : गीता 'चैतन्य'

संपादकीय पता: श्री सिद्धदाता आश्रम, श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम, सूरजकुण्ड रोड, सेक्टर-44, फरीदाबाद, हरियाणा फोनः 0129-2419555, 717

www.shrisidhdataashram.org
info@shrisidhdataashram.org

स्वत्वाधिकारी, जनहित मानव कल्याण केन्द्र के लिए प्रहलाद शर्मा ने मैसर्स मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-95, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित करवाकर ई-9, मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित किया। संपादक : शकुन रघुवंशी*

*अवैतनिक

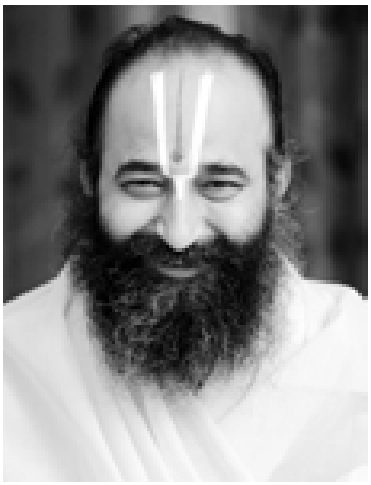

गुरुतत्व जैसा कोई तत्व नहीं।

अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम, फरीदाबाद

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं धर्मसारं मयोदितम्। गुरुगीता समं स्तोत्रं नास्ति गुरोः परम्।। 110।।
अनेन यद् भवेद् कार्यं तद्वदामि तव प्रिये। लोकोपकारकं देवि लौकिकं तु विवर्जयेत्।।111।।

अर्थात् भगवान महादेव बता रहे हैं कि गुरूगीता का पाठ व्यक्ति को जीवन में किस प्रकार उन्नति एवं श्रेष्ठता प्रदान कर सकता है। वह तो कह रहे हैं कि इसके समान कोई अन्य स्तोत्र भी नहीं हैं क्योंकि यह जिनके बारे में कही गई है, ऐसे गुरूजन के समान तो कोई अन्य तत्व भी नहीं है। वह गुरू को तत्व ही कह रहे हैं और वास्तविकता भी यही है कि भगवान अपने इस प्रिय तत्व गुरू तत्व को जब किसी विशिष्ट आत्मा में प्रविष्ट कराते हैं तो वह विशिष्ट आत्मा परमात्मा से वादा ले लेती है कि जिनको मैं तेरी राह में लगाउंगा, तुम्हें उस पर अपनी कृपा करनी ही होगी। इसमें फिर कोई बहाना नहीं चलेगा। ऐसा ही वादा भाष्यकार श्री रामानुज स्वामी जी भगवान नारायण से लेकर आए थे और ऐसा ही वादा वैकुंठवासी गुरू महाराज भी लेकर आए थे।

अर्थ : गुरूगीता के समान कोई स्तोत्र नहीं, गुरु के समान कोई तत्व नहीं। यह समग्र सारों का सार है। यह सत्य है, सत्य है, बार-बार यही सत्य है। इस गुरु गीता का पाठ करना लोगों के लिए उपकार प्रदान करने वाला है। केवल लौकिक कारकों का त्याग करना है। जारी...

वर्षः 15, अंकः 7
जून 2018

कहां - क्या

वैकुंठवासी महाराज
गुरुवाणी 04
मायाकृत संसार छोड़ना है तो शरणागति करनी ही होगी 08
हमारे साथ हमारे पुराने जन्मों के संस्कार भी बंधे हैं 40

गुरुदेव
संदेश 03
गुरू गीता (सरल)– गुरूतत्व जैसा कोई तत्व नहीं है 05
शरणागति में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है 10
दृढ़ इच्छाशक्ति से परमात्मा प्राप्ति संभव 34

अन्य
संपादकीय : आपके पास कितने हैं 06
रिसोर्स योरसेल्फ : एकतरफा तो नहीं चलेगा, ले रहे हो तो देना भी सीखो 07
वास्तुदोष मिटाए श्रीगणेश पूजन 28
दुर्जन व्यक्ति से सांप अच्छा –डी सी तंवर 29
मई माह के पर्व 42

आपके पास कितने हैं

संपादकीय : गीता चैतन्य

आप अपने जीवन में जो भी चाहते हो वो आपको मिल सकता है। इसका कोई एक सिद्धांत नहीं है लेकिन एक सिद्धांत यह जरूर है कि आपको कोशिश ईमानदार और सही समय पर करनी होगी। आप देखते होंगे कि कोई आपके देखते देखते जीवन की बुलंदियों को छू लेता है जिससे कई बार अनेक लोगों की आह निकल जाती है। कई बार यह बुलंदी भौतिक होती है तो कई बार यह आध्यात्मिक भी होती है।

हालांकि अनेक बार आप यह भी देखते होंगे कि किसी व्यक्ति को बिना मेहनत के ही वो मुकाम मिल जाता है जो आपको अनेक प्रयासों के बावजूद नहीं मिल सका है। लेकिन परेशान मत होईये। यही जीवन है। इस जीवन का संगीत सुनने की कोशिश करें। हम आपको सुनाते हैं इस जीवन का संगीत और गुणा भाग।

देखिए, जीवन में बुलंदी पांच कारणों से प्राप्त होती है। इन पांच कारणों में से जितने आपके पास होंगे, उतनी जल्दी और उतनी बड़ी बुलंदी आपको मिलेगी।

यह पांच कारण है– परमात्मा की कृपा, सही समय, आपकी योग्यता, साथियों का सहयोग और आपकी चाहत। अब इसका कोई पैमाना नहीं है कि इन पांचों को या इसमें किन्हीं खास को किस प्रकार पाया जा सकता है लेकिन यह सत्य है कि बुलंदी तो इन पांचों के इर्द गिर्द ही घूमती है। आप भी देखो। आपके पास कितने हैं।

एकतरफा तो नहीं चलेगा, ले रहे हो तो देना भी सीखो!

शकुन रघुवंशी 'श्रीधर'

आप अपने आस पास व्यक्तियों को देख लो। उनसे पूछोगे कि कैसा चल रहा है जीवन, तो अधिकांश का जवाब आएगा- कट रही है या बहुत परेशानी है।

लेकिन कभी आपने सोचा है कि ऐसा कहने वाले अधिकांश लोगों के जीवन में एक आम बात कॉमन है- केवल लेना और लेना, देने की भावना का लोप होना। ऐसे दुखी दिखने अथवा मान लेता हूं कि दुखी रहने वालों के अधिकांश दुखों के कारण वह खुद हैं। उन्होंने सामने वाले लोगों से उम्मीदें लगा ली हैं। अधिकांश ने एक लिस्ट बना रखी है कि फलां से यह काम लेना है, फलां से यह काम लेना है, फलां से यह चीज लेनी है, फलां को यह चीज देनी है।

आपने ऐसे कम ही लोग देखे होंगे जो इस बात की लिस्ट बनाते होंगे कि फलां को यह चीज देनी है, फलां को वह चीज देनी है, फलां के यह काम आना है, फलां के वह काम आना है। मेरे मित्रो, मैं यह बात पूरे यकीन से कह सकता हूं कि अधिकांश लोग लेने की लिस्ट बनाने के कारण दुखी हैं और बाकी बचे अच्छे लोग इन लोगों की लिस्ट के कारण दुखी हैं क्योंकि वह जो लेना है, वह इन अच्छे लोगों से ही तो लेना है। एक समय आने के बाद केवल लेने का भाव भी दुखदाई हो सकता है। इसलिए मुझे जो फॉर्मूला समझ आता है, वह है लेने और देने के दोनों दरवाजे खुले रखना। यही आधार पूरी कायनात का है। जहां हर जीव और वनस्पति कुछ न कुछ ले और दे रहा है। हालांकि मानव के लिए सबसे अच्छा भाव अतिरिक्त को बांट देना और बदले में लेने की इच्छा न रखना है। जयगुरुदेव!

मायाकृत संसार छोड़ना है तो शरणागति करनी ही होगी

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

यदि मानस में लोभ, मोह, दंभ, ईर्ष्या आदि है, यहां तक कि स्पर्धा भी है तो वह शरणागति नहीं है। शरणागत को यह चाहिये कि अपने मन में किसी प्रकार की कामना या इच्छा नहीं रखे। केवल ईश्वर के प्रति यही भाव रखना चाहिए कि तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूं। इसके अतिरिक्त यदि कोई इच्छा है तो शरणाति से दूर होना है।

असली शरणागति वही है कि अपने को उसके ऊपर छोड़ दे कि तू जाने, तेरा काम जाने। उसके बाद वह उसी समय से उसकी रक्षा करना शुरू कर देता है और थोड़ी-थोड़ी बात अपनी करता है और थोड़ी-थोड़ी शरणागत की सुनता है। वह रक्षा उतनी ही करता है। ऐसा तो नहीं कि वह रक्षा नहीं करता है पर उतनी ही करेगा। यदि केवल अपनी ही मनवायेगा, शरणागत वाले की ओर देखेगा ही नहीं, जिसकी शरणागत हुए हैं, कि मेरा तो यह काम कर दे, तो हो सकता है वह न भी करे। भगवान तो हमारा प्यारा है। यह नहीं कह सकते कि प्यारा नहीं और हम उसके प्यारे हैं, यह भी गलत नहीं। जैसे मां-बाप को बेटा-बेटी

कितने प्यारे होते हैं, उनसे पूछो, जब बेटा ज्यादा जिद करने लग जाता है तो मां उसे पुचकारती है। वह फिर भी नहीं मानता, तो वहां मां जिस बच्चे को रात-दिन प्यार करती है, वहीं मां उसे उठाकर फेंक भी देती है, चाहे उसका हाथ टूट जाये, सिर फूट जाये। किसको? जो बालक अपनी चला कर जिद्दी हो जाता है, उसको इसलिए कभी-कभी हम अपनी बात मनवा लें और हम तो रोज-रोज उसकी मानें ही मानें। कभी-कभी मन आ गया तो अपनी मनवा लें।

शरणागति में अहंकार नहीं होना चाहिए। जो माया को छोड़ देता है, उसे भगवान् की शरणागति करनी ही पड़ती है। शरणागति मीमांसा में लिखा गया है कि जिसको मायाकृत संसार बन्धन से छूटने की इच्छा होगी, उसे भगवान की शरणागति करनी ही पड़ेगी। भगवान् श्रीनिवास के श्री चरणों में शरणागति किये बिना किसी देव के बल से, या वर्ण के बल से, आश्रम के बल से या साधन स्वरूप कर्म योग, ज्ञान, भक्तियोग के बल से करोड़ों जन्म में भी कोई इस माया बन्धन से छुटकारा नहीं पा सकेगा। थोड़ी देर के लिए भले ही चाहे जो कुछ कह सुन ले परन्तु कहने-सुनने के कुछ लाभ नहीं हो सकेगा। भगवान् की माया से तो तभी पार होगा, जबकि जाहि-जाहि करके इतरावलम्ब त्यागपूर्वक भगवान् की कृपा का अवलम्ब लेगा। जीवों में मिथ्या अहंकार घुसा है। अहंकार में पड़ के भगवत्कृपा पात्र अनुभवी सद्गुरुओं के पास जाते नहीं, अतः शास्त्रों के असली विषय का निर्णय होता नहीं। इससे यह जीव शरणागत वत्सल भगवान् की शरणागति रक्षणरूप अचूक रीति को नहीं जानकर भगवान् को छोड़ इतर साधनों में व्यर्थ पचि-पचि कर मरता है। दुनिया में ऐसा कौन अधिकारी है कि इतरावलम्ब छोड़कर भगवान् की शरणागति कर लेने के बाद माया को नहीं तर सकता है, अर्थात् अवश्य तरेगा।

शरणागति को देखिये कि इसमें कितनी बड़ी विलक्षणता है। तुम गहरी नींद में सोये हुए हो, वस्त्र पहने हुए हो, तकिये लगे हुए हों, विलासिता का पूरा सामान हो और लाख रूपये का फोन आ जाये तो भी नहीं उठेंगे। लाख रूपये का नुकसान हो जाये तो कहेंगे कि कुएं में जाने दो। हमें सोने दो, कल देखेंगे। पर जब एक छोटा सा बच्चा रोना शुरू करता है तो भाई भी उठकर आ जाता है, बाप भी उठकर आ जाता है, बुआजी भी आ जाती है, मौहल्ले वाले भी आ जाते हैं। रात को 2 बजे दिसम्बर के महीने में, जनवरी के महीने में, सब परिवार को इकट्ठा कर देता है। कौन? एक बच्चा। जो अबोध है? जो कुछ नहीं चाहता, वो।

शरणागति में अहंकार नहीं होना चाहिए। जो माया को छोड़ देता है, उसे भगवान् की शरणागति करनी ही पड़ती है। शरणागति मीमांसा में लिखा गया है कि जिसको मायाकृत संसार बन्धन से छूटने की इच्छा होगी, उसे भगवान की शरणागति करनी ही पड़ेगी।

बाबा कहते हैं

शरणागति में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज,
पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

शरणागति में किसी प्रकार के ऊंच नीच का भेद नहीं। जाति-पांति का भी भेद नहीं और आयु से कोई सम्बन्ध नहीं कि इतने साल का होगा तभी शरणागति होगी। शरणागति में किसी प्रकार का भेद नहीं है। इसलिए कोई भी यह न सोचे कि मैं यदि अमीर होता तो भगवान की शरणागत होता, मैं पढ़ा-लिखा होता तो शरणागत होता। यहां पढ़े-लिखे का सम्बन्ध नहीं बल्कि यह कहूंगा कि अनपढ़ होकर जो शरणागत होता है, उसकी सर्वोपरि शरणागति मानी जाती है क्योंकि पढ़े-लिखे में तर्क होता है और तर्क में भगवान् नहीं। तर्क शरणागति को काट देता है। इसलिए पढ़ा-लिखा भी अनपढ़ होकर शरणागत होये। शरणागति के लिए बार-बार कहुंगा कि यह बहुत चरम उपाय है।

अब यह समझ लें कि शरणागति है क्या। भगवान को स्वीकार कर लेना ही शरणागति है। शरणागति के बाद भाव बदल जाते हैं। यदि भाव नहीं बदले तो शरणागत नहीं हुआ।

जो हरिभक्त होकर शरणागत हो गये

वो 'हरिगोत्रे सुजायते', वह भगवान् के गोत्र का ही हो गया। संसार का गोत्र हट गया। संसार का गोत्र रहा ही नहीं। शरणागति इस तरह की है कि वह भगवान् के गोत्र में मिल जाये। पर भगवान के गोत्र में मिलने का भाव यह आप अन्यथा मत लेना कि हम केवल भगवान् के ही बनकर रह जायें। ऐसा भी नहीं है क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण कर्मयोग का पूरा ज्ञान अर्जुन को दे रहे हैं कि हे अर्जुन, तू संसार में रहकर संसार के काम जरूर कर। शरणागति में लोग कहते हैं कि हमें तो कुछ करना ही नहीं। यह गलत धारणा है। जैसे पति के घर जाकर कन्या का गोत्र बदल गया पर क्या वह रोटी नहीं बनाती, क्या वह काम नहीं करती अर्थात् शरणागत होकर प्रभु की सेवा करें।

एक ब्रजवासी खेती का काम करता था। एक दिन एक महात्मा चले गये। महात्मा कहने लगे, ब्रजवासी! तुम क्या कर रहे हो? ब्रजवासी ने कहा कि हम तो अपने कन्हैया जी के लिए खेती कर रहे हैं। महात्मा कहने लगे, हम अनन्य भक्त हैं, तू बता कौन है? ब्रजवासी कहने लगा, यदि तुम अनन्य भक्त हो तो हम फनन्य भक्त हैं। महात्मा बोले, फनन्य का क्या अर्थ होता है? ब्रजवासी बोले कि अनन्य का क्या अर्थ होता है? महात्मा कहने लगे कि जो गणेशजी, ब्रह्माजी आदि-आदि का ध्यान न करके केवल नारायण का ही ध्यान करें, वे अनन्य भक्त होते हैं। ब्रजवासी बोला, हम तो इनको जानते भी नहीं, जिनके तुमने नाम लिये। इसलिए हम फनन्य भक्त हो गये अर्थात् शरणागत हो जाने के बाद उस आराध्य देव को सर्वोपरि मान लिया जाये। जो भी देव हों, चाहे वे रामजी हों, चाहे गोविन्दजी हों, उनको अपना सर्वोपरि मान लिया। और सर्वोपरि स्वीकार करके अनन्य देवों की कामना से उपासना न करके नमन जरूर करें। नमन करना तो हमारे शास्त्र का विधान है।

हर जीव में, हर जगह भगवान को देखें, यही हमारी संस्कृति है, हमारा हिन्दुत्व है अर्थात् हर देव को नमस्कार करते हुए अपने आराध्यदेव को सर्वोपरि स्वीकार करें। उसी का नाम अनन्य भक्ति है और उसी का नाम अनन्य शरणागति है।

शरणागत होने के बाद अनेकानेक देवों की प्रार्थना, आराधना, उपासना करने पर वह शरणागति कट जाती है। भगवान् जी कहते हैं कि तू अमुक जगह की आराधना कर रहा है, उनसे ले ले। इसलिए वह शरणागति से दूर होने लग जाता है। शरणागत भक्त वही है जो अपने परमात्मा से प्रार्थना करे और यह मान ले कि परमात्मा 33 करोड़ देवताओं का मालिक है। 33 करोड़ देवता उसी के अधीनस्थ हैं। वह ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन तीनों का प्रादुर्भाव करता है अर्थात् तू पैदा कर, तू पालन कर, तू संहार कर।

एक पैदा करने का काम कर रहा है, एक पालन का और एक संहार का काम कर रहा है। ये तो विभागों के अधिकारी हैं। ये मोक्ष नहीं दे पायेंगे। जो इनको सृजन करता है, पैदा करता है वो मोक्ष दे सकता है। उसकी शरणागति हो जाने के बाद, आप बताइये, हमारे पास कमी क्या रह जाएगी।

शरणागत हुए भक्त के पास भगवान की चाबी रहती है। अगर शरणागत भक्त कुछ मांग लेते हैं तो भगवान दे देते हैं, मना नहीं करते। जिन भक्तों ने नहीं मांगा, उनके सामने वो बिक गए। गोपिकाओं ने नहीं मांगा, उनके हाथ बिक गये। गोपिकायें शरणागत थीं, उनके यहां भगवान छाछ पीने लगे, नाचने लगे, बिक गये। पूतना ने मोक्ष मांगी, मां के रूप में। भगवान ने उसे मोक्ष दे दी। वह स्तन पर जहर लगाकर दूध पिलाने के लिए आयी थी। मां स्वीकार कर लिया तो स्तनों को मुंह लगा दिया। मां स्वीकार हो गई। यशोदा की मार खायी। ऊखल से बंध गये और अनेकानेक प्रकार की यातनायें सहीं, वो बिक गये।

शरणागत भक्त के यहां भगवान् बिक जाते हैं, उनके अधीनस्थ हो जाते हैं। अधीनस्थ वो तभी होते हैं जब उनसे अधिक मांग न की जाये। अपने आपको उनके शरणागत होकर छोड़ दीजिए। वो अपने आप ही काम करने लग जाते हैं।

राजस्थान में धन्ना नाम का एक जाट हुआ। धन्ना खेती करता था। आप जानते हैं कि राजस्थान में खेती न के बराबर होती है। बाजरा होता है, मोठ होती है और कुछ होता नहीं। वह बाजरा-मोठ की खेती तो भूल गया और सन्त द्वारा भगवान की शरणागत हो गया। शरणागत होकर भगवान जी का भजन करने लग गया। भगवान् बिक गए। कैसे बिक गए? 12 वर्ष तक उन्होंने धन्ना जाट के यहां खेती की।

शरणागति सर्वोपरि है। उससे आप भगवान को खरीद लें। आप दिव्य लोक के मालिक बन जायें। वो कहते हैं, तू चल मैं आ रहा हूं। कितने आनन्द का विषय है।

हालांकि कुछ लोग शरणागति और कर्म को मिलाने लगते हैं और दावे करने लगतो हैं तो उन्हें बता दूं कि शरणागति अलग है और कर्म विपाक संहिता अलग है। दोनों एक जगह नहीं मिलाये जा सकते। कर्ज लेना और कर्ज देना, दोनों अलग-अलग विषय हैं। देनेवाला धनवान है, लेनेवाला ले रहा है। इसलिए विषय अलग हैं। कर्म विपाक संहिता को आप नये कर्मों में नहीं मिला सकते।

शरणागति होने का एक लाभ होता है कि उन 100 प्रतिशत कष्टों में से 90 प्रतिशत कष्ट समाप्त कर दिये जाते हैं, 10 प्रतिशत कष्ट भोगने पड़ते हैं, जिसको आप लोग कहते हैं कि हमारे भाग्य में सूली थी पर शूल पर निकल गयी। सूली शूल पर निकल जाती है, शरणागत हो जाने के बाद।

लेकिन शरणागति का अर्थ यह नहीं है कि ''मैं आपकी शरण में हूं, मैं आपकी शरण हूं'' कहने लगो। केवल कहने से शरणागति नहीं होती, मानने से होती है। शरणागत हूं, शरणागत हूं, शरणागत हूं, ऐसा कहना केवल जिह्वा का विषय है। जब तक आत्मा से शरणागति स्वीकार नहीं की जाती तब तक मुख से आप करोड़ों बार कहते ही रहें, आप शरणागत नहीं हो सकते। और जब चित्त और आत्मा ने मान लिया कि हे प्रभुजी! तू मेरा है और मैं तेरा हूं, तभी शरणागति हो गई। बस दो ही शब्दों का ध्यान है – तू मेरा है, मैं तेरा हूं।

लेख

स्वयं को खोजने से प्राप्त होते हैं ईश्वर

लोग सबकुछ खोजते हैं केवल स्वयं को नहीं खोजते और यही उसके परेशान होने का प्रमुख कारण भी है...

मनुष्य जीवनभर ईश्वर की खोज में दर-दर भटकता है लेकिन उसे कहीं भगवान नहीं मिलते हैं। ईश्वर स्वयं को खोजने से मिलते हैं। स्वयं को खोजो तो ईश्वर से मुलाकात होगी। ईश्वर को खोजना है। कहां खोजूं। ईश्वर की खोज की बात ही गलत है। स्वयं को खोजो, ईश्वर मिलेगा। स्वयं को खोजो, ईश्वर तुम्हें खोजेगा। स्वयं को न खोजा, लाख सिर पटको ईश्वर की तलाश में- और कुछ भी मिल जाए, ईश्वर मिलने वाला नहीं है। जो स्वयं को ही नहीं जानता, वह अधिकारी नहीं है ईश्वर को जानने का। उसकी कोई पात्रता नहीं है। पहले पात्र बनो। आत्म-अज्ञान सबसे बड़ी अपात्रता है। वही तो एकमात्र पाप है और सब पाप तो उसी महापाप की छायाएं हैं। सारे पापों से लोग लड़ते हैं- क्रोध से लड़ेंगे, काम से लड़ेंगे, लोभ से लड़ेंगे, द्वेष से लड़ेंगे, मद-मत्सर से लड़ेंगे -और एक बात भूल जाएंगे कि भीतर अंधकार है। ये सांप-बिच्छू उस अंधकार में पलते हैं। भीतर रोशनी चाहिए, प्रकाश चाहिए, आत्मबोध चाहिए। ध्यान की बात पूछो, ईश्वर की चर्चा ही मत उठाओ।

बीज बोए नहीं और फूलों की बात करने लगे कहां से फूल आएंगे हां, प्लास्टिक के फूल मिल सकते हैं बाजार में, मंदिरों में, मस्जिदों में, गुरुद्वारों में, गिरजों में। प्लास्टिक के भगवान हैं, आदमी के गढ़े हुए भगवान हैं। वे मिल सकेंगे और अगर तुमने ज्यादा मेहनत की, बहुत कल्पना को दौड़ाया, तो तुम्हारी कल्पना में भी धनुर्धारी राम का दर्शन हो जाएगा। सपना है वह, इससे ज्यादा नहीं। मोर-मुकुट बांधे हुए कृष्ण खड़े हो जाएंगे, वह भी तुम्हारी कल्पना है, इससे ज्यादा नहीं। जब तक तुम जागते नहीं हो भीतर, जब तक तुम भीतर सोए हुए हो- उसी को मैं आत्म-अज्ञान कह रहा हूं- तब तक तुम जो भी करोगे, गलत ही होगा।

ईश्वर को क्यों खोजना है।

अगर परमात्मा तुम्हें नहीं खोजना चाहता है और भागा-भागा फिरता है, तो तुम कितना ही खोजो, तुम्हारी बिसात कितनी है। तुम्हारे हाथ कितने दूर जा सकेंगे तुम्हारी पहुंच की सीमा है और वह असीम है। वह अपने को छिपा-छिपा लेगा। लोग अपने को खोजेंगे नहीं, ईश्वर को खोजने के लिए राजी हैं।

मैं हूं तो क्या हूं, कौन हूं, प्रश्न के अतिरिक्त सारे प्रश्न व्यर्थ हैं, खोपड़ी की खुजलाहट से ज्यादा नहीं हैं।

ईश्वर को खोजना चाहते हो ईश्वर यानी कौन।

जब तक मिला नहीं, तब तक तो तुम्हें यह भी पता नहीं कि ईश्वर शब्द का अर्थ भी क्या होगा। सबकी अपनी-अपनी धारणा है। किस ईश्वर को खोजोगे। ये सारी धारणाएं मनुष्य द्वारा निर्मित हैं। और ईश्वर पाया जाता है तब, जब मनुष्य-निर्मित सारी धारणाएं गिरा दी जाती हैं, जब तुम धारणा-शून्य हो जाते हो, धारणा-मुक्त हो जाते हो।

यह तलाश ऐसी है, जैसे अखबार में विज्ञापन पढ़कर पैदा हो जाती है। क्षण भर पहले तक जरा तुम्हें कोई अड़चन न थी। क्षण भर पहले तक कोई जरूरत नहीं थी, अभी-अभी हो गई। परमात्मा को पाना है, तो सब विद्या भूलो। यह ज्ञान सब उधार है। जानो कि मैं अज्ञानी हूं। जानो कि मैं कुछ भी नहीं जानता हूं, तो बुद्धि से छुटकारा हो जाएगा। छोटे बच्चे की भांति निर्दोष बनो और सरको हृदय की तरफ, ताकि तुम, आश्चर्य से भर जाओ। चारों तरफ जो सौंदर्य है प्रकृति का इसे देखकर अवाक हो जाओ; ताकि तुम्हारे भीतर संगीत उठे, नृत्य उठे, गीत उठे; ताकि तुम्हारे भीतर गुलाल उड़े, ताकि तुम्हारे भीतर उत्सव शुरू हो उसी उत्सव में, उसी वसंत के क्षण में परमात्मा का आगमन होता है। दो चीजें ही आदमी को अटकाती हैं- नाम और रूप। नाम भी झूठ, रूप भी झूठ। नाम मन में बैठ जाता है और रूप देह है, शरीर है। तुम दोनों नहीं हो। न तुम नाम हो, न तुम रूप हो। तुम अनाम हो, अरूप हो और तुमने अगर अपने अनाम-अरूप को अनुभव कर लिया तो वही तो परमात्मा का प्रथम अनुभव है।

लेख

ईश्वर को तुम बचा खुचा ही समय क्यों देते हो

अधिकतर तुम ईश्वर को बचा-खुचा समय देते हो, 'जब तुम्हें कुछ और करने को नहीं होता।

हम जब भगवान की बात करते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त ऊपर की ओर देखता है। ऊपर वहां पर क्या है? ऊपर से केवल बरसात होती है और ऊपर कुछ नहीं है। प्रत्येक वस्तु हमारे अन्दर है, न ऊपर है न नीचे है। अन्दर की तरफ देखना या अपने अन्दर रहना ही अध्यात्म है।

जब तुम अपने किसी नजदीकी व्यक्ति, अपने मित्र या किसी अन्य की तरफ देखते हो तो तुम्हें क्या लगता है? तुम्हारे अन्दर कुछ-कुछ होता है। तुम्हें ऐसा अनुभव होता है कि कोई नई ऊर्जा तुम्हारे अन्दर से होकर प्रवाहित हो रही है। उन महान क्षणों को पकड़ो। यह वही महान क्षण हैं जो समयशून्य क्षण होते हैं। ठीक है, तुमने उस व्यक्ति की उपस्थिति के कारण उन समयशून्य क्षणों का अनुभव किया होगा। उस व्यक्ति ने तुम्हारे अन्दर उन भावनाओं को उत्पन्न किया होगा, तो क्या हुआ? उस व्यक्ति विशेष में रुचि रखने के बजाय या उस स्थिति में रुचि रखने के बजाय बस तुम केवल अपने अन्दर हो रहे ऊर्जा के स्रोत के प्रवाह के साथ रहो।

ईश्वर ने तुमको दुनिया में सभी छोटे-मोटे सुखों व आनन्द को दिया है, लेकिन चरम आनन्द को अपने पास रखा है। उस चरम आनन्द को प्राप्त करने के लिए तुम्हें उस ईश्वर और केवल ईश्वर के पास ही जाना होगा। अपने प्रयासों में निष्ठा रखो। ईश्वर से

तुम अपने को अधिक होशियार और चालाक बनने की कोशिश मत करो। जब तुम इस चरम आनन्द को प्राप्त करते हो तो बाकी प्रत्येक वस्तुएं आनन्दमय हो जाती हैं। इस चरम आनन्द के बिना दुनिया की किसी भी चीज में आनन्द टिकाऊ नहीं होगा। ईश्वर को तुम किस तरह का समय देते हो? अधिकतर तुम ईश्वर को बचा-खुचा समय देते हो, 'जब तुम्हें कुछ और करने को नहीं होता, जब कोई मेहमान नहीं आ रहे होते, तुम्हें किसी पार्टी में नहीं जाना होता, कोई अच्छा सिनेमा देखने को नहीं होता और किसी शादी आदि में नहीं जाना होता'। यह अच्छा तथा स्तरीय समय नहीं है। ईश्वर को अच्छा समय दो, इससे तुम पुरस्कृत होगे। यदि तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार नहीं होती तो इसका मतलब है कि तुमने ईश्वर को अच्छा समय नहीं दिया है। सत्संग और ध्यान को अपनी सबसे ऊंची प्राथमिकता दो। भगवान को सबसे महत्वपूर्ण समय दो। इसका तुम्हें अवश्य ही अच्छा पुरस्कार मिलेगा। जब तुम भगवान से कोई वरदान प्राप्त करने की शीघ्रता में नहीं हो तब तुम्हें यह अनुभव होगा कि भगवान तुम्हारा है। सजगता या अभ्यास के द्वारा तुम इसी बिन्दु पर पहुंच सकते हो। ईश्वर या दैव तुम्हारा है। जब तुम यह जान जाते हो कि तुम पूरे ईश्वरीय सत्ता के ही एक अंश हो, तो तुम उससे कोई मांग करना बन्द कर देते हो। तब तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए सब कुछ किया जा रहा है। तुम्हारी देखभाल की जा रही है। प्राय: हम इसको दूसरे तरीके से करते हैं। मन में उतावलापन लिए होते हैं, लेकिन अपने कार्यों में हम सुस्त होते हैं। मन में शीघ्रता या उतावलापन करना धैर्य की कमी होती है।

श्री सिद्धदाता आश्रम फेसबुक पर भी

श्री सिद्धदाता आश्रम में आयोजित होने वाले पर्वों एवं क्रियाकलापों की जानकारी फेसबुक पर पाने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर जाकर लाइक करें।

www.facebook/shrisidhdataashram

Shri Sidhdata Ashram is now on Facebook.

You can watch photographs of latest events, weekly message from Shri Guruji ans get regulat updates from Ashram on your facebook account.

To receive updates on your Facebook account visit Ashram's FB page

www.facebook.com/shrisidhsataashram

and click on Like

also do visit our website www. shrisda.org to watch latest News, Updates, Photographs and to download Books, Monthly Magazine and Wallpapers.

लेख

मंदिर में मिलती है सकारात्मक उर्जा

जब विचार से ठोस पदार्थ के अणु प्रभावित हो सकते हैं, तो हमारा शरीर क्यों नहीं प्रभावित हो सकता है?

साधक शांत मुद्रा में आंखें बंद करके बैठ जाए और ईश्वर के दिव्य प्रकाश का स्मरण करे, तो अनंत अंतरिक्ष में विशाल प्रकाश पुंज दिखाई पड़ेगा। मौन प्रार्थना का अर्थ है, अपने सकारात्मक विचारों को एकत्र कर किसी दिव्य प्रकाश युक्त बिंदु पर स्थिर करना। प्रार्थना में सबसे महत्वपूर्ण है, आपका सकारात्मक विचार। मनुष्य किस भाव से, किस कारण से, किस कामना की सिद्धि के लिए मंदिर में बैठा है, वह सब परमात्मा समझता है। मौन प्रार्थना में विचार प्रधान होता है। वहां कोई भाषा नहीं होती, केवल विचार होता है। विचार ऊर्जा है और ऊर्जा को ही एनर्जी कहते हैं। ऊर्जा का कभी नाश नहीं होता, केवल उसका रूप बदल जाता है। शायद इसीलिए संतों के आश्रम के चारों ओर इसी सकारात्मक ऊर्जा का क्षेत्र व्याप्त रहता है और मनुष्य जब उस वातावरण में प्रवेश करता है, तो उसे महसूस होने लगता है कि उसके अशांत मन को यहां बड़ी शांति मिल रही है। कि मनुष्य जब उस क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो वहां के वातावरण का प्रभाव उसके शरीर पर पड़ने लगता है और उसके शरीर में जैविक परिवर्तन होने लगता है।

आपके दर्द की मूल वजह अपेक्षा ही है

अहंकार अपेक्षाओं को जन्म देता है। हम जिस भाव को लेकर जीते हैं, यदि वह पूरा नहीं होता तो मन उदास हो जाता है।

खुश रहने के दो ही रास्ते हैं–अपनी सच्चाई पर विश्वास रखें और अपेक्षाओं में कटौती करें। अपेक्षा करें, लेकिन अपने आप से। अपेक्षाओं का निर्धारण अपनी सीमाओं में रहकर करें, दृढ़प्रतिज्ञ हो जाएं।

दरअसल हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती एक व्यक्ति को उसके मूल स्वभाव और रूप में स्वीकार करने की होती है। जिस क्षण हमें यह आत्मबोध हो जाएगा कि हमारी अपेक्षाएं लोगों में परिवर्तन नहीं ला सकतीं, तो कोई आकांक्षा ही नहीं रहेंगी, क्योंकि स्थिति विकट तभी होती है, जब अपेक्षाएं पूर्ण न हों। इसीलिए अपेक्षाओं की उड़ान कभी अप्रत्याशित, अव्यावहारिक या असाध्य नहीं होनी चाहिए। ऐसे में हमें पहले से ही तय कर लेना चाहिए कि हम क्या चाहते हैं और अमुक वस्तु को प्राप्त करने से क्या लाभ मिलेगा? ऐसा करने से हमें वास्तविक इच्छाओं और क्षणिक चाहतों के बीच का अंतर समझने में आसानी होगी। अपेक्षाओं से मुक्त होने के लिए आवश्यक है अपने निर्णय का उत्तरदायित्व समझदारी से लेना होगा। अहंकार अपेक्षाओं को जन्म देता है। हम जिस भाव को लेकर जीते हैं, यदि वह पूरा नहीं होता तो मन उदास हो जाता है। जो करना है, स्वयं करना है। आप किसी से अपने समान किसी कार्य के प्रति समर्पण की अपेक्षा नहीं कर सकते।

मन में घृणा नहीं, प्रेम का भाव ही रखें

प्रेम लोगों को आकर्षित करता है तो दूसरी ओर घृणा लोगों को विकर्षित करती है। घृणा से जितना हो सके, उतना बचो।

घृणा की मनोवृत्ति का मूल कारण हमारे मन में स्थित कोई ग्रंथि होती है, जिसको पहचानकर सुलझाने की कोशिश हमें करनी चाहिए। ग्रंथि के सुलझते ही घृणा की मनोवृत्ति भी अपने आप ही नष्ट हो जा

किसी से घृणा का प्रमुख कारण हम ही हैं

घृणा और प्रेम मानव मन की दो ऐसी भिन्न अवस्थाएं हैं, जिसके हम सभी अनुभवी हैं। एक ओर जहां प्रेम दूसरों को आकर्षित करता है, वहीं दूसरी और घृणा विकर्षित करती है। वातावरण में कटुता, क्रोध, गंदगी फैलाती है, मानसिक रोग उत्पन्न करती है और आत्म-भाव में संकोच उत्पन्न करती है। आधुनिक मनोविज्ञान की खोजों से पता चलता है कि हमारी किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति घृणा का प्रमुख कारण हमारे ही अंदर है।

घृणा की मनोवृत्ति का मूल कारण हमारे मन में

प्राय: देखा जाता है कि जो व्यक्ति जिस प्रकार के लोगों से घृणा करता है, वह स्वयं भी कुछ काल के अनंतर उन्हीं घृणित गुणों को अपना लेता है। घृणा एक ऐसी अग्नि है, जिसमें मनुष्य का अपना ही रक्त और मस्तिष्क ईंधन की तरह जलने लगते हैं। उसका खून खौलता रहता है, वह डाह

एवं रोष के मारे जलता है, उसका विवेक नष्ट हो जाता है और उसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगता है। घृणा की मनोवृत्ति किसी विशेष विचार को हमारे मस्तिष्क में बैठा देती है। संवेगों के उत्तेजित होने पर कभी-कभी यही बाह्य विचार का रूप धारण कर लेते हैं और जितना ही अधिक हम उनको भूलना चाहते हैं, उतने ही वे हमारे मन को जकड़ते जाते हैं और अंत में मानसिक रोग का रूप धारण कर लेते हैं। घृणा की मनोवृत्ति का मूल कारण हमारे मन में स्थित कोई ग्रंथि होती है, जिसको पहचानकर सुलझाने की कोशिश हमें करनी चाहिए।

छुटकारा पाना नहीं है आसान

ग्रंथि के सुलझते ही घृणा की मनोवृत्ति भी अपने आप नष्ट हो जाएगी। साधारणत: हम अपनी बुराइयों को स्वीकार नहीं करना चाहते, किंतु आध्यात्मिक नियमानुसार हमें एक न एक दिन अपनी बुराइयों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है। तत्पश्चात् हमारी प्रकृति धीरे-धीरे हमें आत्म-स्वीकृति की ओर ले जाना आरंभ करती है। पहले हम अपने इन दुर्गुणों को दूसरों में देखने लगते हैं और धीरे-धीरे उन्हीं पर विचार करते-करते स्वयं उनके शिकार बन जाते हैं। वास्तव में दुर्गुण कहीं बाहर से नहीं आते। वे तो पहले ही हमारे भीतर मौजूद रहते हैं। हम ही उनकी उपस्थिति स्वीकार नहीं करते इसीलिए प्रकृति टेढ़े-मेढ़े रास्ते से उनकी आत्म-स्वीकृति कराती है। अगर प्रारंभ में ही हम इन दुर्गुणों को मान लें, तो उनसे छुटकारा पा जायें किंतु जब प्रकृति जबरदस्ती इन्हें स्वीकार कराती है तो वे हमें जकड़ लेते हैं। फिर इनसे छुटकारा पाना उतना सरल नहीं होता।

कैसा बनाना चाहते हैं अपना चरित्र

हम यह कहकर घृणा की उत्पत्ति का औचित्य नहीं ठहरा सकते कि अमुक व्यक्ति ने ऐसा किया और उसके परिणामस्वरूप हमारे मन में उसके प्रति घृणा पैदा होना स्वाभाविक था या यदि हममें घृणा न हो तो दूसरों के गलत कार्यों के विरुद्ध आवाज कैसे उठा सकेंगे और घृणा के अभाव में तो हम उनके गलत कार्यों को बर्दाश्त करके झुकते जाएंगे। नहीं! हमें यह समझना चाहिए की मन में किसी तरह भी घृणा की उपस्थिति अनुचित है क्योंकि दूसरे की बुराई को बुराई बताते हुए हम अपनी बुराई को अनुचित नहीं कह सकते। स्मरण रहे! हमारे मन पर दूसरों के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता है। अत: हमारा चरित्र उसी प्रकार बनता जाता है।

घृणा की भावना हर प्रकार से घातक है

मान लीजिये यदि हमारे आस-पास हमसे प्रेम करने वाले व्यक्ति होते हैं, तो हमारे अंदर भी प्रेम की भावना का उदय होना स्वाभाविक होता है। जब हम किसी व्यक्ति के गुणों अथवा दुर्गुणों पर बार-बार विचार करते हैं, तो हमारे विचार उसके लिए निर्देश बन जाते हैं और इन निर्देशों का गहरा प्रभाव उसके ऊपर पड़ता है। उसके भीतर वही गुण अथवा बुराइयां स्थान पा लेती हैं। इस तरह दोनों प्रकार से घृणा की भावना घातक होती है।

हमें एक न एक दिन अपनी बुराइयों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है।

आत्मविश्वास में कमी से भय उत्पन्न होता है

मनुष्य के लिए भय को अनदेखा करना आसान नहीं होता, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि वह भय का सामना ही न कर पाए।

जब हमारे आत्मविश्वास में कमी आती है, तो हमारे भय का जन्म होता है। इसका हमें कोई सटीक आभास नहीं होता है कि भविष्य में क्या होगा।

जब हमारे आत्मविश्वास में कमी आती है, तो हमारे भय का जन्म होता है। इसका हमें कोई सटीक आभास नहीं होता है कि भविष्य में क्या होगा, लेकिन हम अक्सर इसे लेकर मन ही मन बहुत कुछ सोचने लगते हैं। ऐसे में यदि हमारे विचार सकारात्मक होते हैं, तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ जाता है, लेकिन जब हम अंजाम के बारे में नकारात्मक बातें सोचने लगते हैं, तो हमारा आत्मविश्वास डिगने लगता है और जाने-अनजाने हम भय के जाल में फंस जाते हैं।

इस स्थिति में मनुष्य के लिए भय को अनदेखा करना आसान नहीं होता, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि वह भय का सामना ही न कर पाए। भय से बचने के लिए मनुष्य को थोड़ा साहस जरूर दिखाना पड़ता है। जान लीजिए कि जो डर से डर गया, वह मर गया वरना डर के आगे जीत है। डर और साहस का एक संबंध है, क्योंकि साहस का न होना ही डर के पैदा होने का कारण होता है। साहस एक ऐसी शक्ति है, जिसके सामने डर अपना सब

कुछ खो देता है। मनुष्य को सर्वप्रथम अपने भय की पहचान करनी चाहिए। ऐसा इसलिए, क्योंकि अपने भय को पहचाने बगैर हम कभी उससे छुटकारा नहीं पा सकते। जिस बात या कार्य से आपको भय लग रहा है, उस कार्य को बार-बार करें। इसके बावजूद आपका भय कायम है, तो उस कार्य को तब तक करते रहें, जब तक आपका भय पूरी तरह से भाग न जाए। आप जितनी बार भय देने वाले कार्य को करेंगे, उतनी आपकी हिम्मत बढ़ती जाएगी। एक समय ऐसा जरूर आएगा, जब आपके भय को उलटे पैर भागना ही पड़ेगा। वैसे यह दुनिया बड़ी मनोरम और सुंदर है, इसमें भय जैसा कुछ भी नहीं है। भय तो हमारे ही मन की एक स्थिति है।

किसी के लिए ऊंचे पहाड़ रोमांच का एक साधन हैं, तो दूसरे को पहाड़ की ऊंचाई मृत्यु का भय दिखाती है। पहाड़ अपनी जगह खड़े हैं, लेकिन मनुष्यों की मनोदशा बदली हुई है। भय कुछ और नहीं, बल्कि पाने की लालसा और खोने का डर है। जो मनुष्य यह बात जानते हैं कि वे इस धरती पर खाली हाथ आए हैं और उन्हें खाली हाथ ही जाना है, तो उन्हें कभी किसी बात का भय नहीं होगा। अगर आपको यह पता चले कि आज आपकी जिंदगी का आखिरी दिन है, तो आप भय में दिन गुजारेंगे या प्रसन्नता में? मनुष्य को अपनी मृत्यु का भय अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए। उसकी मृत्यु अटल सत्य है, इसलिए उसे मृत्यु से डरने के बजाय उसका स्वागत करना चाहिए और हर दिन को ऐसी भावना से जीना चाहिए कि यह उसकी जिंदगी का आखिरी दिन है।

एक था हिरण्यकशिपु

पौराणिक कथाओं के अनुसार, राजा हिरण्यकशिपु प्रजा के बीच स्वयं को ईश्वर के रूप में स्थापित करना चाहता था, जबकि उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु-भक्त था। अपने पुत्र के विचारों को बदलने का हिरण्यकशिपु ने हर संभव प्रयास किया। बहन होलिका की गोद में बैठाकर उसे अग्निकुंड में भी जलाने का प्रयास किया, लेकिन वह विफल रहा। प्रह्लाद की भक्ति में इतनी गहराई थी कि पिता का कोई भी अनुचित कार्य उसे अपने विचारों से डिगा नहीं सका। दरअसल, प्रह्लाद ने चैतन्य होकर अज्ञानता के काले रंग को मिटाने में पूर्ण सफलता पा ली थी। देखा जाए तो हिरण्यकशिपु स्थूलता का प्रतीक है और प्रह्लाद आनंद और श्रद्धा का प्रतीक है। चेतना को भौतिकता तक सीमित नहीं किया जा सकता। हिरण्यकशिपु भौतिकता से सब कुछ प्राप्त करना चाहता था। कोई भी जीव अपने विचारों की शक्ति से भौतिकता से परे हो सकता है। होलिका अतीत की प्रतीक है और प्रह्लाद वर्तमान के आनंद का प्रतीक है। यह प्रह्लाद की भक्ति ही थी, जो उसे आनंद और जीवंत (पीत रंग) बनाए रखती थी। आनंद और जीवंतता के होने से जीवन उत्सव बन जाता है। भावनाएं आपको अग्नि की तरह जलाती हैं, पर यह रंगों की फुहार की तरह होनी चाहिए, तभी जीवन सार्थक होता है। ज्ञान के साथ जुड़कर भावनाएं जीवन में रंग भर देती हैं।

लेख

कर्म की राह पर चलें, मिलेगा परमात्मा का प्रसाद

हिन्दू धर्म का उद्भव या निर्माण ही ज्ञान से हुआ है। अत: यह ज्ञान स्वरुप है। वेदों के रूप में इसमें परम ब्रह्म सदैव विद्यमान रहता है।

मन की जो एक अवस्था है, उस पर अधिक उत्ताप देने से वह आत्मा में रूपांतरित हो जाएगा। क्योंकि आत्मा से ही मन बनता है। मन सूक्ष्म हो गया तो आत्मा हो गया। तुम्हारे मन पर साधनाग्नि का प्रयोग होगा तो मन आत्मा में रूपांतरित हो जाएगा। जिस तरह ईश्वर का ज्ञान ही सही ज्ञान है, वैसे ही ईश्वर की उपासना सही कर्म है। भक्ति अलग साधना नहीं है। जो भक्ति पाना चाहते हैं, वे ज्ञान और कर्म की साधना करेंगे। ज्ञान साधना से कर्म साधना अधिक होनी चाहिए। अधिक ज्ञान साधना से मन में घमंड हो जाएगा। तो ज्ञान साधना हो, मगर कर्म साधना उससे अधिक हो। तीसरी बात है कर्म साधना में सिद्धि क्या है? अपने लिए कुछ नहीं, समूह के लिए सब कुछ। कैसे? अपने मन को परमात्मा में रूपांतरित कर दिया है, तब अपनी जो खूबी है वह तो रहती ही नहीं है। सब को लेकर सब कुछ करेगा, वही है कर्म साधना में सिद्धि। मन जब परमात्मा में रूपांतरित हो गया, वह अपने लिए क्या करेगा? वह समूह के लिए ही सब कुछ करेगा। भक्ति के संबंध में कहा था कि ज्ञान से जहां कर्म अधिक है, वहीं भक्ति का जागरण होता है। ज्ञान-कर्म की साधना चल रही है, भक्ति भी बढ़ रही है। तुमलोग मन में अनुभव करते हो। तो ज्ञान-कर्म की साधना करते रहो। ज्ञान से कर्म की

साधना अधिक करो। दर्शन की चर्चा से साधना अधिक देर तक करो। भक्ति साधना में सिद्धि क्या है? जब साधक की अपनी कोई इच्छा नहीं रहेगी, यानी 'मेरा यह होना चाहिए, मेरा वह होना चाहिए, नाम मिलना चाहिए, यश मिलना चाहिए, सम्मान मिलना चाहिए, मेरे लिए यह सही है, अपने लिए यह करूंगा, वह करूंगा' आदि की भावना जब बिल्कुल नहीं रहेगी और एक ही भावना रह जाएगी कि मैं परमपिता के निर्देश के अनुसार, 'उनकी इच्छा के अनुसार काम करूंगा, मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है' यही है भक्ति साधना में सिद्धि। वह किस तरह की वस्तु है। एक तालाब है। उसमें एक ढेला फेंको। तालाब के पानी में स्पंदन उत्पन्न हो जाएगा। तालाब में इधर-उधर मान लो कोई वस्तु है, नाव है, यह है, वह है।

पानी में जिस प्रकार तरंगें होंगी, पानी में जितनी वस्तुएं हैं वे सब भी उसी प्रकार नाचती रहेंगी। तो परमपुरुष के मन में भी तरंग है जिसके द्वारा उन्होंने यह विश्व-ब्रह्मांड बनाया है। इस तरंग के अनुसार जिसका मन नाचता है, वह है भक्त।

।। श्री गुरूहरिः ।।

श्री सिद्धदाता आश्रम
श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

प्रांगण में जनहित सेवा चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

नि:शुल्क विशाल चिकित्सा शिविर

प्रत्येक रविवार प्रात: नौ बजे से

उच्च प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों एवं उनके सहयोगियों द्वारा आयुर्वेद, अंग्रेजी, होम्योपेथी व प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों को बेहतर और निशुल्क चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं।

वैकुंठवासी गुरू महाराज की कृपा एवं अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से शिविर अपनी उपयोगिता स्वयं सिद्ध कर रहे हैं। अब तक लाखों जरूरतमंद इसका लाभ उठा चुके हैं और सैकड़ों मरीज प्रतिदिन अपना इलाज कराकर लाभांवित हो रहे हैं।

निर्जला एकादशी सभी पापों से मुक्त कराए

निर्जला एकादशी का व्रत करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्ति पाता है. तथा सभी तीर्थों में स्नान करने के समान है.

इस वर्ष 2018 में निर्जला एकादशी का व्रत 23 जून को रखा जाएगा। ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की निर्जला एकादशी को भीमसेनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। इस व्रत को करने से व्यक्ति को दीर्घायु तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। निर्जला अर्थात जल के बिना रहना इस कारण इसे निर्जला एकादशी कहा जाता है। इस व्रत में जल का सेवन भी नहीं किया जाता। इस दिन ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप करके गौदान, वस्त्रदान, छत्र, फल आदि दान करना चाहिए। निर्जला एकादशी व्रत- महाभारत काल में भीमसेन ने व्यास जी से कहा की हे भगवान, युधिष्ठर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कुन्ती तथा द्रौपदी सभी एकादशी के दिन व्रत किया करते हैं परंतु मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर वासुदेव भगवान की अर्चना करके प्रसन्न कर सकता हूं। मैं बिना काया कलेश की ही फल प्राप्त करना चाहता हूं अत: आप कृपा करके मेरी सहायता करें। इस पर वेद व्याद जी भीमसेन से कहते हैं कि हे भीम अगर तुम स्वर्गलोक जाना चाहते हो, तो दोनों एकादशियों का व्रत बिना भोजन ग्रहण किए करो क्योंकि ज्येष्ठ मास की एकादशी का निर्जल व्रत करना विशेष शुभ कहा गया है। इस व्रत में आचमन में जल ग्रहण कर सकते है. भीमसेन ने यह व्रत किया और वे पाप मुक्त हो गये।

जप तप से भी कलियुग में जीवन असानी से बीतेगा

किसी भी व्यक्ति की बात को सुनने मात्र से ये नहीं कहा जा सकता कि वो झूठ बोल रहा है या सच

आधुनिक जीवन में सफलता का अर्थ पैसों और सुख-सुविधा की चीजों से जुड़ा हुआ है। अंधाधुध पैसे कमाने की होड़ में कोई व्यक्ति ये नहीं सोचता कि उससे भौतिक दुनिया की सुख-सुविधा कमाने के कारण कितने पाप हो गए हैं।

दान- दान करने का अर्थ है किसी जरूरतमंद को वो चीज निशुल्क उपलब्ध करवाना, जिसे पाने में वो अक्षम है। दान करने से पहले या बाद किसी को भी दान के बारे में नहीं बताना चाहिए। दान को हमेशा गुप्त ही रखना चाहिए। आत्म संयम- कई बार ऐसा होता है कि हमारा मन और दिमाग दोनों विपरीत दिशा में चलते हैं और हम अधर्म कर बैठते हैं। सत्य बोलना- कलियुग में सत्य और असत्य का पता लगाना मुश्किल हो गया है। अगर आपने भूतकाल में कोई गलत काम किया है, तो आप शेष बचे जीवन में हमेशा सत्य बोलकर पापों का प्रायश्चित कर सकते हैं। ध्यान या जप- आधुनिक युग में ऐसे लोग बहुत कम बचे हैं, जो रोजाना ध्यान करते हो। पूजा-पाठ भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं बल्कि स्वंय का स्वंय से मिलन करवाने के लिए की जाती है। आत्मध्यान करके हम आत्मसाक्षात्कार कर सकते हैं। नियमित रूप से स्वच्छ मन से जप या ध्यान करने से भूल से हुई गलतियों से पार पाया जा सकता है

लेख

प्रभुकृपा के स्नेह के बिना जीवन यात्रा संभव नहीं

यदि मनुष्य के हाथ में कुछ होता तो वह मनचाहा जीवन जीने की प्रभुता रखता

संसार में जो भी जिसे मिला है वह महज प्रभुकृपा से ही। वह उतनी ही देर उस पद अथवा सत्ता पर आसीन रह सकता जितनी देर प्रभुकृपा से उसे अवसर प्राप्त हुआ है। अपने पुण्यकर्मों के प्रभाव से प्राप्त पद की गरिमा, शक्ति व चकाचौंध में अज्ञानता से वशीभूत होकर वह समय व अपने अधीनस्थों को अपने निर्देशों से निर्देशित करना चाहता है। वह भूल जाता है कि यहां जो कुछ भी मिला है वह महज प्रभुकृपा से ही सुलभ हुआ है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता की पराकाष्ठा तक पहुंचने के दो ही सूत्र हैं। एक कार्य के प्रति संघर्षयुक्त निष्ठा और दूसरा जो प्रमुख कारक है वह है प्रभुकृपा। जीवन में हर व्यक्ति संघर्ष व मेहनत करता है। प्रभुसत्ता के समक्ष संसार की सारी सत्ताएं धरी की धरी रह जाती हैं। उसके बगैर वे वैभव व श्रीहीन हो जाती हैं। यदि मनुष्य के हाथ में कुछ होता तो वह मनचाहा जीवन जीने की प्रभुता रखता, लेकिन एक क्षण भी वह प्रभुकृपा की स्नेह-छांव के बगैर जीवन यात्रा का पग आगे नहीं बढ़ा सकता। संसार में जो भी जिसे मिला है वह महज प्रभुकृपा से ही। जीव को जीवन का हर अवसर प्रभु द्वारा उसकी उत्तम बुद्धिमत्ता, शक्ति, विवेक, पौरुष व उसकी मौलिकता की परीक्षा के लिए दिया जाता है कि उसमें वह प्रभु के सौंपे गए उत्तरदायित्वों में कितना खरा सिद्ध होता है।

लेख

वास्तुदोष मिटाए श्रीगणेश पूजन

जिस घर में भगवान श्रीगणेश को नित्य पूजा जाता है वहां वास्तु दोष दूर होते हैं

जिस घर में विघ्नहर्ता भगवान श्रीगणेश की अर्चना होती है वहां दुख-दरिद्रता नहीं आती है। वास्तु शास्त्र में मान्यता है कि जिस घर में भगवान श्रीगणेश को नित्य पूजा जाता है वहां वास्तु दोष दूर होते हैं और घर में खुशहाली आती है। भगवान श्रीगणेश की उपासना से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहे इसके लिए घर के मुख्य दरवाजे पर आम, पीपल और नीम से बनी भगवान श्रीगणेश की मूर्ति लगाएं। घर के मुख्य द्वार पर श्रीगणेश की मूर्ति या चित्र लगाया हो तो दूसरी तरफ ठीक उसी जगह पर श्रीगणेश की मूर्ति इस प्रकार लगाएं कि दोनों गणेशजी की पीठ मिली रहे। घर से वास्तु दोषों को दूर करने के लिए क्रिस्टल से बनी गणपति की मूर्ति को स्थापित कर सकते हैं।

घर की उत्तरी दिशा में लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति स्थापित करें। मूर्ति के नीचे लाल कपड़ा बिछाएं। घर में बैठे हुए एवं कार्यस्थल पर खड़े गणपति जी का चित्र लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि खड़े गणेश जी के दोनों पैर जमीन को स्पर्श करते हुए हों। घर में सुख, शांति के लिए सफेद रंग के गणपति की मूर्ति लगाना चाहिए। श्रीगणेश का चित्र लगाते समय ध्यान रखें कि चित्र में मोदक या लड्डू और चूहा अवश्य होना चाहिए।

लेख

दुर्जन व्यक्ति से सांप अच्छा

डी सी तंवर

...और यहां आपके शहर में व्यवसाय के साथ-साथ बसना भी चाहता है। परन्तु वहां के लोग बहुत ही अच्छे एवं

भले हैं और वह लोग उसको वहां से आने नहीं दे रहे हैं। उस पहले व्यक्ति ने कहा कि यहां के लोग तो बहुत ही अच्छे हैं। इन शब्दों को सुनकर फरीदाबाद वाले व्यक्ति से एक संत प्रवृति के पुरूष ने कहा कि अभी तो आप बता रहे थे कि यहां के लोग बहुत खराब हैं और इन मुरैना वाले सज्जन से कह रहे हो कि यहां के लोग बहुत अच्छे हैं। फरीदाबाद वाले व्यक्ति ने उत्तर दिया ''कि जो जैसा होता है, उसे दूसरा वैसा ही नजर आता है।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिला कोई।
जो जग ढूंढा आपना, मुझसे बुरा न कोई।।

दुर्गुण स्वभाव वाले व्यक्ति त्यागने योग्य दुर्गुणी मंत्री से राजा, विषय आसक्ति से योगी, पत्नि से अधिक प्यार, दुलार से पुत्र, स्वाध्य के अभाव में ब्राह्मण, कुपुत्र से कुल, दुष्टों की संगति से सदाचारी, मद्यपान से लज्जा, सुरक्षा के अभाव में कृषि, परदेश में रहने से मित्रता, अनीतिपूर्ण आचरण से ऐश्वर्य और कुपात्र को दान देने व प्रमाद से धन नष्ट हो जाता है। महाराज भृतहरि ने लोभ को दुर्गुणों में सबसे बड़ा दुर्गुण माना है और चुगल खोरी व परनिंदा को पाप देने वाले माना हैं। व्यक्ति को लोभ, चुगल खोरी और

समस्त अपयश कार्यों को त्याग देना चाहिये। सत्य बोलना, मन की पवित्रता, स्वभाव में सज्जनता और यहा देने वाले समस्त कार्य ही अपनाने चाहिऐ।

जिनका दुष्ट स्वभाव है वे दूसरों में दोष ही निकालते रहते हैं। सौम्य स्वभाव व लज्जाशील पुरूषों को मूर्ख, व्रत करने वालों को पाखण्डी और चरित्रवान को कपटी कहकर बदनाम करते हैं। वह साधु-संत एवं मुनियों को अपने कुतर्कों से बुद्धिहीन सिद्ध कर देते हैं। वह धनवानों को अहंकारी और धर्म पर बोलने वाले वक्ताओं को बकवास करने वाला बताकर अपमानित करते रहते हैं। ऐसे ही गम्भीर पुरूषों को वे निर्बल और सार्मथ्यहीन बताते हैं। तथा दुर्जन व्यक्ति हर किसी में दोष निकाल ही देते हैं।

दुर्जनों द्वारा बैर

जिस तरह दिन के प्रारम्भ में छाया बड़े आकार की होती है और बाद में धीरे-धीरे घटते हुए छोटा रूप ग्रहण कर लेती है, फिर दिन के उत्तरार्द्ध में छोटी होकर धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। ठीक इसी प्रकार दुष्टों व सज्जनों की मित्रता होती है।

मृग घास खाकर व मछली जल पीकर संतोष पूर्वक रहते हैं, तो भी शिकारी मछेरे उनसे द्वेष रखते हैं। वैसे ही दुर्जन सज्जनों से अकारण ही वैर रखते हैं।

नीच कर्मों द्वारा इच्छानुसार आचरण करने वाले, एकाएक सम्पत्ति पाने वाले, धार्मिक वृत्ति से दूर रहने वाले, गुणियों से द्वेष रखने वाले नीच व्यक्ति से भला किसने सुख पाया है।

फल संचित कर्मों द्वारा

मनुष्य अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही सुख-दुख भोगते हैं और वैसी ही उनकी बुद्धि भी हो जाती है। पूर्व जन्म में किए गए तप से संचित भाग्य इस जन्म में अच्छे फलों की प्राप्ति कराता है। अत: व्यक्ति को चाहिए कि सोच समझ कर ही कार्य करे। इस भवसागर में क्षमा, सत्य, दया, दान और जीवन में सरलता ऐसे दैवी गुण हैं, जिनका अनुपालन करने मात्र से जीव मुक्ति पा जाता है। वेद अध्ययन का सार है- सत्यभाष्ण, सत्यभाषण का सार है- इन्द्रिय संयम और अन्त में इंद्रियसंयम का फल है- मोक्ष।

जीवन में तप, इन्द्रिय संयम, सत्य भाषण और मनोनिग्रह कार्य सबसे उत्तम हैं। अत: इन्द्रिय संयम का दृढता से पालन करना चाहिए। मानव को चाहिए कि वह प्रिय-अप्रिय की स्थिति में समभाव रहे। किसी के मर्म को आघात न पहुंचाए और निष्ठुर वचन न बोले। वचन रूपी बाण, जब मुंह से निकल जाते हैं, तब उनके द्वारा बींधा गया मनुष्य, हर क्षण उद्विग्न रहता है। अत: वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रख कर सभी के प्रति मधुर वचन ही बोलने चाहिए। ब्रह्मा जी कहते हैं, जो दूसरों के द्वारा अपने लिए कटु वचन कहे जाने पर भी उसके प्रति कठोर शब्द नहीं बोलता और किसी के द्वारा चोट खाकर भी उसका अहित नहीं सोचता, ऐसे महात्मा से मिलने के लिए देवता भी सदा लालायित रहते हैं।

अत: विद्वानों का मत है-

''तस्येह देवा: स्पृहयन्ति नित्यम्।''

धैर्य के साथ बुरे समय का सामना भगवान विष्णु ने पृथ्वी एवं स्वर्ग का राज, राजा बलि से लेकर इन्द्र को दे दिया था।

क्रमश:

।। श्री गुरूहरिः ।।

वैकुंठवासी स्वामी श्री सुदर्शनाचार्य जी महाराज की कृपा से स्थापित व प्रकाशित एवं अनंतश्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में प्रकाशित मासिक पत्रिका श्री सुदर्शन संदेश के प्रचार प्रसार के लिए प्रण लें। - संपादक

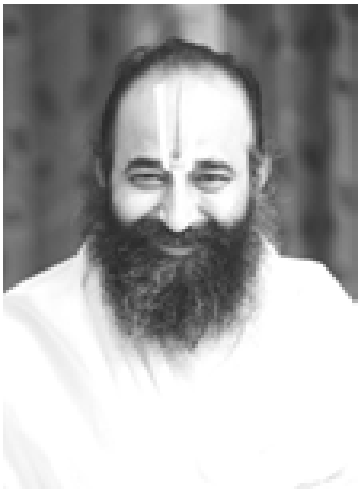

आपको क्या होगा लाभ!

पहले यह जान लें कि पत्रिका की सदस्यता एवं प्रचार प्रसार के मायने क्या हैं वास्तव में ''गुरुवचनों का प्रचार'' अर्थात् गुरु की ही सेवा है। गुरू महाराज के वचनों के अनुसार शास्त्र कहते हैं– जो शिष्य गुरु के वचनों का प्रचार प्रसार करता है, उनको अंगीकार करता है वास्तव में वह गुरू की सीधी कृपा का पात्र बनता है।

गुरू के वचनों को पढ़ने पढ़ाने से आपको अपने जीवन का सही अर्थ पता चलेगा। आपको निरंतर सत्संग मिलेगा। आपको सही और गलत में अंतर करने की बुद्धि मिलेगी। आप अपने धार्मिक कर्म, पर्व, त्यौहार, पित्रों को प्रसन्न करने, घर परिवार में कैसे रहें आदि आदि जानकारियों को समझ सकेंगे। इसके साथ ही आप गुरू वचनों को हृदय में धारण करेंगे।

आपसे प्रार्थना है कि श्री सुदर्शन संदेश पत्रिका के सदस्य बनें व बनाएं। श्री गुरू महाराज की कृपाओं को प्राप्त करें।

लेख

परमात्मा ही आखिरी उम्मीद

जीवन में आस्था, समर्पण और त्याग के भाव ही हमें परमात्मा से जोड़ते हैं।

जब मनुष्य के मन में परमात्मा के प्रति भक्ति भाव जाग्रत होता है तो उसे कुछ भी अपने विपरीत लगता ही नहीं। ऐसे व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति का आनंद लेते हैं और यह मानते हैं कि प्रतिकूल परिस्थितियां भी उनके अनुकूल ही हैं। ऐसे में मनुष्य को लगता है कि प्रत्येक कार्य परमात्मा की इच्छा से ही हुआ है, इसलिए विपरीत परिस्थितियां भी जरूर उनके हित में होंगी। ऐसे व्यक्ति अपना सर्वस्व परमात्मा के ऊपर छोड़ देते हैं और उनके जीवन में बुरा समय भी आता है तो वे उसका मुकाबला धैर्य और साहस से करते हैं। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो भी मेरी शरण में आता है वह भवसागर पार कर लेता है। मनुष्य को हमेशा यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि उसके विकास का आधार आलस्य नहीं, बल्कि विषम परिस्थितियां हैं। मनुष्य को अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में परमात्मा की शक्ति की आवश्यकता होती है। इसलिए उसे हमेशा परमात्मा को याद करते रहना चाहिए। फिर चाहे वह सुखमय जीवन जी रहा हो या फिर उसका जीवन संकट में हो। कवि कहता है कि दुख में हर कोई परमात्मा को याद करता है, लेकिन सुख में नहीं। यदि मनुष्य सुख में भी परमात्मा को याद करे तो उसे दुख आएगा ही नहीं। जीवन में आस्था, समर्पण और त्याग के भाव ही हमें परमात्मा से जोड़ते हैं।

दृढ़ इच्छाशक्ति से परमात्मा प्राप्ति संभव

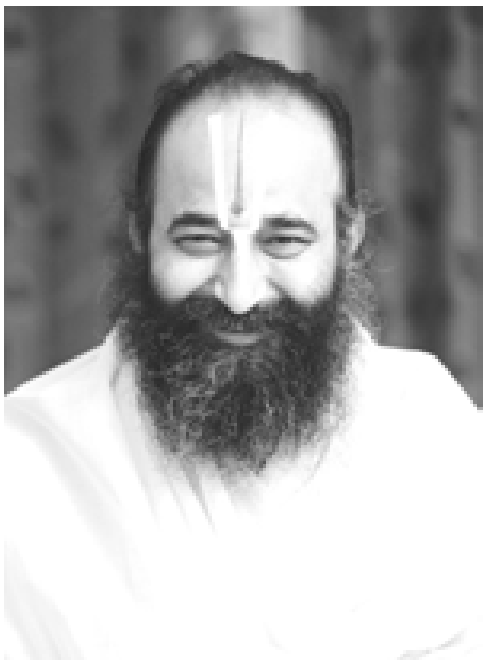

श्रीमद् जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज, *पीठाधिपति-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम*

दृढ़ता ही परमात्मा की प्राप्ति का मूल साधन है। अगर दृढ़ता नहीं रही तो परमात्मा की प्राप्ति भी नहीं हो सकती। दृढ़ता का प्रत्यक्ष अनुभव हम व्रत से कर सकते हैं, महादेव का, देवी मय्या का, हनुमान जी बाबा का, राम जी का, कृष्ण जी, शिवजी, किसी का भी। बाबा हनुमान जी का व्रत ले लिया। व्रत में दृढ़ता है हनुमान जी के प्रति। हम दिन में तीन बार खाते हैं, चार बार खाते हैं। पर उस दिन भूख नहीं लगती। यदि हमसे कोई कहे कि आज तो हमारे यहां इमरती आई हुई हैं, आप स्वल्पाहार कर लीजिये। तो यही कहेंगे कि नहीं महाराज! आज तो हमारा मंगलवार का व्रत है। इमरती से ऊपर भी यदि कोई और मिठाई हो तो तब भी नहीं खाते और भूख भी नहीं लगती। ये बहन बेटियां या बहुत से मेरे भाई भी व्रत करते हैं। ज्येष्ठ के महीने में जब घोर लू रहती है, बेहद गरमी रहती है और वे निर्जला व्रत करती है यानी उस दिन जल नहीं पिया जाए, जबकि डाक्टर कहते हैं कि उन दिनों में सात लीटर से बारह लीटर तक पानी पीना चाहिये। उस दिन वे दृढ़ निश्चय कर लेती हैं कि मेरा एकादशी का व्रत है, निर्जला

है। मेरे प्रेमियो! उस दिन उसकी प्यास कहां चली जाती है? भूख कहां चली जाती है; ऐसा भी नहीं है कि वे वातानुकूलित कमरे में रहती हों। कार्यालय जाने वाली कार्यालय जाती हैं। गृहिणी घर का काम करती हैं। हर काम को करती हैं, पर चेहरे पर उदासीनता नहीं होती। उल्टा उस दिन बड़ी प्रसन्नता होती है। न भूख लगी न प्यास लगी। मेरे प्रेमियो! यह बिना विश्वास के नहीं होता।

लक्ष्य बनाने से पहले हमें यह निश्चित दृढ़ निश्चय करना पड़ेगा कि मानव का वास्तविक लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति ही है, भौतिकवाद नहीं है। जब ऐसा हमारा विचार हो जायेगा तो निश्चित लक्ष्य स्वतः ही बन जायेगा और लक्ष्य के बाद हमें उसको दृढ़ करना है। दृढ़ता आ जाने के बाद परमात्मा कभी दूर नहीं होता।

नई बात नहीं है, यह तो पुरातन काल से चली आई है कि परमात्मा की प्राप्ति इसी भौतिकवाद के अन्दर, इसी मृत्यु लोक में, हमसे पूर्व करोड़ों करोड़ों असंख्य मानव प्राप्त कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। दृढ़ निश्चय, दृढ़ विश्वास मीरा को बना। मीराजी लिखती हैं–

'थे आज्योजी आधी रात'।

इसका मतलब है कि वह भगवान् साक्षात आते थे। मीराजी अपने पदों में बड़ा स्पष्ट कहती हैं कि जब कभी कृष्ण नहीं आते थे तो वे कहती थीं कि 'वायदा कर के तू नहीं आया'। इससे सिद्ध होता है कि श्रीकृष्ण वहां पर आते थे। अगर हम दृढ़ निश्चय कर लें तो क्या भगवान् हमारे पास नहीं आयेंगे? अवश्य आयेंगे।

मानवता हमारे पास होगी और लक्ष्य परमात्मा मिलन का हमने बना लिया और उस पथ पर हम चल दिये तो अवश्य लक्ष्य प्राप्ति होगी। चलने पर ही प्राप्ति होती है।

हमारी पांच चीजें हैं–काम, क्रोध, मद, मोह और लोभ। ये मेरे अन्दर भी हैं, आप के अन्दर भी हैं, सब के अन्दर हैं। जब क्रोध का नशा चढ़ता है तो हम न गुरु को देखते, न शिष्य को देखते, न मां को देखते, न बाप को देखते। बोलते हैं होगा तो होगा अपने घर का। ऐसे नशे वाले हैं ये। गुस्सा आता है कि हम यहां नहीं रहेंगे, फिर भी मोह के वशीभूत हो कर वहीं रहते हैं। कई बार विचार होता है कि अब तो हम आश्रम छोड़कर कहीं और चले जायेंगे, हरिद्वार जायेंगे। पर उस आश्रम का मोह कुछ ऐसा फंस गया कि फिर वहीं आ जाते हैं। तो मोह रूपी खूंटे से यह जीवन रूपी नौका बंधी हुई है। इस संसार को हमने विश्राम घाट मान लिया है कि यहीं सब कुछ मिल रहा है, यहां से अच्छी शांति और कहीं नहीं मिलेगी। हमने भौतिकवाद के सुखों को विश्राम घाट मान लिया और इस विश्राम घाट पर ही नौका को खे रहे हैं।

मेरे प्रेमियो! नौका यहीं की यहीं रह जायेगी। आगे नहीं बढ़ पायेगी। तुम्हारा लक्ष्य फिर किस काम का रहेगा? जब आगे नहीं बढ़ेंगे तो लक्ष्य अलक्ष्य बन कर के रह जायेगा। वह मानव जीवन का लक्ष्य अलक्ष्य हो जाएगा। प्राण तो गिनती के हैं न पास, वे चले जायेंगे। इसलिये लक्ष्य को बना कर के उस पर गमन करना बहुत जरूरी है। काम, क्रोध, मद, लोभ रूपी जो चौबे हैं, ये तो मदोन्मत्त हैं। इस मोह रूपी खूंटे से जीवन रूपी नौका के रस्से को थोड़ा सा ढीला कर दें, खोल दें। नौका चलने लगेगी।

लक्ष्य बनने के बाद हमें यह विचार करना है कि नौका

कहीं बह न जाये। अगर हमने रस्सा खोल भी दिया तो नौका प्रवाह के साथ बहने लगेगी, जैसा प्रवाह होगा उस तरफ बहने लगेगी। जब नौका बहने लगेगी तो उसको दिशा ज्ञान नहीं रहता है, पानी के साथ चल देती है। फिर हमारा लक्ष्य बिगड़ जाता है, दिशा ज्ञान के बिना। इसलिये दिशा ज्ञान होने के लिये हमें प्रभु नामस्मरण की आवश्यकता पड़ेगी, सद्ग्रन्थों की पड़ेगी, सन्त जनों की पड़ेगी, ताकि दिशा निर्धारित होती रहे।

नौका में एक छेद होता है। वह छेद अवश्य होता है क्योंकि उस छेद के बिना नौका डूब जायेगी। छेद में से नौका में पानी भरता रहता है एक सतह तक और सतह के बाद योग्य मल्लाह उस पानी को नौका से बाहर फेंक देता है। फिर नौका जल में खड़ी रहती है; फिर पानी को बाहर फेंक देता है। मल्लाह से पूछा जाये कि पानी क्यूं फेंकते हो? तो कहता है साहिब! उसके डूबने का डर है। अगर अपनी सतह से पानी ज्यादा हो गया तो नौका डूब जायेगी, सवारी डूब जायेंगी, मैं डूब जाऊंगा, मेरा परिवार भी डूब जायेगा। इसलिये पुनः पुनः इस नौका से हमें पानी निकालना पड़ता है। मेरे प्रेमियो! उस नौका में एक छेद है। उस छेद से नौका डूब सकती है। पर योग्य मल्लाह उसका पानी बार-बार निकालता रहता है। आपकी और मेरी नौका में तो, मेरे प्रेमियो! दस छेद हैं। ब्रह्मरन्ध्र भी है। दस छेद की नौका कैसे तरेगी? कुछ तो विचार करो। योग्य मल्लाह के बिना यह पार नहीं की जा सकती।

महान लोग, सन्त लोग, सिद्ध लोग जिस मार्ग पर चले हैं, उस मार्ग पर हमारा अनुगमन करना, चलना ही उत्तम मल्लाह का मिलना है और जब तक उत्तम मल्लाह नहीं होगा तो यह दस छेदों वाली नौका डूब जायेगी, ज्यादा समय नहीं लगता, डूब जाती है।

संसार की वस्तुएं तभी तक हैं जब तक हम हैं। ये वस्तुएं तब भी मौजूद थीं जब हम नहीं थे और जब हम नहीं रहेंगे तब भी रहेंगी। अगर हम करोड़ रुपये जोड़ कर मरे तो मरे, अरब जोड़ कर मरे तो मरे, खरब जोड़ कर मरे तो मरे; क्योंकि हमने वह अपना लक्ष्य बना लिया। लक्ष्य उसको बनायें जिसको हम साथ ले जायें। जो वस्तु हमारे साथ नहीं चल सकती, उसको लक्ष्य नहीं मानना चाहिये, वह लक्ष्य झूठा है, मिथ्या है। वैसे ये वस्तुयें हमको चाहिये। जब तक अन्तिम श्वांस चलेगी, तब तक चाहिये। धन की आवश्यकता तो है पर वह हमारा लक्ष्य नहीं। आजकल हम उसको लक्ष्य मान बैठे हैं। मानव में विशेष रश्मियां हैं। मानव की अपेक्षा देवताओं में हमसे ज्यादा तेज रश्मियां होती हैं और परमात्मा पूर्ण ज्योतिस्वरूप है। वह ज्योतिस्वरूप है तभी तो उसकी रश्मियां इतनी तीव्र हैं कि उससे चान्दणा फैल रहा है। बाबा नानकदेव जी ने नूर कहा, चान्दणा कहा–'अल्लाह अकबर नूर उपाया।' मुसलमान उसे नूर कहते हैं–नूर-ए-जहां, इस्लामे-नूरे, नूर-ए-इलाही अर्थात दिव्य प्रकाश। और उसी को हम ने ज्योति कहा कि वह परमात्मा ज्योति स्वरूप है, चान्दणा है। उस ज्योति का दीदार करो, उसे देखो, ज्योति के दर्शन करो। वह परमात्मा ज्योतिर्मय है अर्थात् दिव्य प्रकाश वाला है। आगे वे विचार करते हैं कि यह रोशनी तो चोरी की हुई है। इसका मतलब है कि ये कहीं और से किरणें ले रहे हैं। डिवाइन लाइट, सुप्रीम लाइट तो वह परमात्मा है। उसके द्वारा ये सब प्रकाशमान हैं।

लेख

अपने मन की शक्ति को पहचानिए

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद की जय करें।

भौतिकवादी समाज की कुरीतियों में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि मनोविकार मनुष्य के मन पर अधिकार बनाए हुए हैं और अवसर पाते ही अपना दुष्प्रभाव दिखाने लगते हैं।

इनकी प्रतिद्वंद्विता में आत्मसंयम का सहारा ले लिया जाए तो मनुष्य जीवन की सफलता में संदेह नहीं रहता। साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या बड़े-बड़े सम्राट भी काम के अधीन हो आत्मसंयम को तिलांजलि दे डालते हैं और मुश्किल में फंस जाते हैं। इतिहास प्रमाण है कि गांधीजी ने क्रोध पर नियंत्रण करके प्रेम और अहिंसा के अस्त्रों द्वारा अंग्रेजी साम्राज्य का अंत किया। जो व्यक्ति इंद्रियों के दास होते हैं वे इंद्रियों की इच्छाशक्ति पर नाचते हैं। संयमहीन पुरुष सदा उत्साह-शून्य, अधीर और अविवेकी होते हैं। इसलिए उन्हें क्षणिक सफलता भले मिल जाए, पर अंतत: उन्हें बदनामी और पराजय ही मिलती है। आत्मसंयमी व्यक्तियों में सर्वदा उत्साह, धैर्य और विवेक रहता है जो उनकी सफलता की राह तय करते हैं। मानव की सबसे बड़ी शक्ति मन है इसलिए वह मनुज है। मन की शक्ति अभ्यास है, विश्राम नहीं। इसलिए तो मन मनुष्य को सदा किसी न किसी कर्म में रत रखता है। आत्मसंयम को ही मन की विजय कहा गया है।

लेख

जीवन में रंग भी विशेष महत्व रखते हैं

सफ़ेद रंग में पारदर्शिता की शक्ति होती है। नीले रंग के प्रयोग से शांति का अनुभव

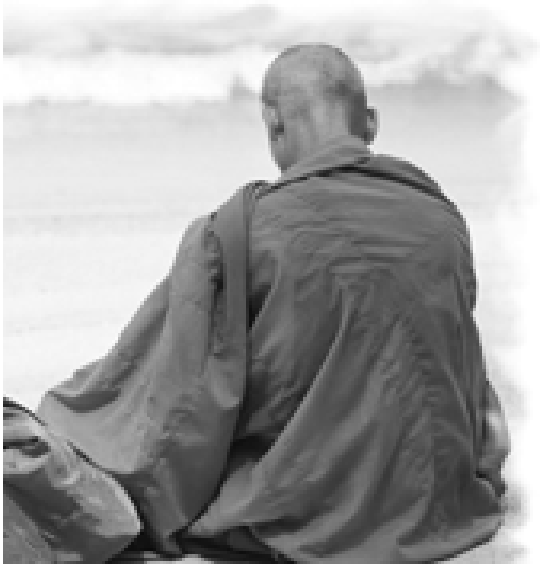

सूरज के ताप का और प्रकाश का हमारे सरीर पर प्रभाव होता है, वैसे ही रंगों का प्रभाव भी हमारे शरीर और मन पर होता है। पढ़ने लिखने वाली जगहों पर गुलाबी रंग मिलता है। पीला रंग ज्ञान तंतुओं को ठीक करता है। आचार्य ज्ञान के प्रतीक होते हैं। इसलिए साधु संत पीले रंग के कपड़े पहनते हैं। जिसके ज्ञान तंतु और मस्तिष्क कमजोर हैं, वे पीले रंग का प्रयोग कर लाभ उठा सकते हैं। क्रोध, अहंकार, हिंसा और झूठ का अपना अपना रंग होता है। जब आदमी झूठ बोलता है, तो उसके चेहरे का रंग काला पड़ जाता है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति के चहरे में आभा आ जाएगी। सर्दियों में काला कम्बल ओढ़ते हैं। गर्मी में सफेद कपड़े पहनते हैं। काले रंग में प्रतिरोधात्मक शक्ति होती है। बाहर की वस्तु को आत्मसात नहीं करता। बाहर ही रोक देता है। सफ़ेद रंग में पारदर्शिता की शक्ति होती है। नीले रंग के प्रयोग से शांति का अनुभव होता है। हरे रंग में रोग मिटाने कई अपूर्ण क्षमता होती है। वह विष के प्रभाव को मिटाने में शक्तिशाली साधन है। हरा रंग ठंडा होता है। नीले रंग का ध्यान करने से शांति मिलती है। शांति व पवित्रता के लिए श्वेत रंग प्रभावशाली होता है। लाल रंग शक्ति व स्फूर्ति का संचार करता है। पीला रंग भावना शुध्दि का प्रतीक है। हरा रंग ठंडा व नेत्र ज्योतिवर्धक होता है। नीला रंग अध्यात्म विकास का प्रेरक है।

महसूस कीजिए परमात्मा को

भगवान इस तरह संसार में स्थित हैं गौर से महसूस कीजिए

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।।
गीता 9/4।।

अर्थः मुझे अव्यक्त से यह संपूर्ण जगत व्याप्त है, समस्त भूत मुझमें स्थित हैं, किन्तु मैं उनमें स्थित नहीं हूं ।।4 ।।

व्याख्याः परमात्मा का कोई आकार नहीं है, वह तो सब जगह फैली हुई परम चेतना है, जिसका कोई चिह्न भी नहीं है, इसलिए वह अव्यक्त है। यह अव्यक्त परमात्मा इस सारे जगत में ऐसे ही फैला है, जैसे दूध में मक्खन रचा-बसा है।

यहां ऐसा कुछ भी नहीं जो परमात्मा के अतिरिक्त हो। परमात्मा के कारण ही यह संसार दिखाई देता है। प्रकृति में सब कुछ पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पांच भूतों से बना है, सभी प्राणी इन्हीं पांच भूतों से बने हैं।

भगवान कह रहे हैं कि जगत के सारे भूत मुझमें ही स्थित है, ऐसा कोई भी भूत प्राणी नहीं, जो मुझमें स्थित न हो, लेकिन मैं उन सब भूतों में स्थित नहीं हूं।

जानलंगा

इस दुनिया में जो कुछ भी आपके पास है, वह बतौर अमानत ही है और दूसरे की अमानत का भला गुरुर कैसा ? बेटा बहु की अमानत है, बेटी दामाद की अमानत है, शरीर शमशान की अमानत है और जिन्दगी मौत की अमानत है। अमानत को अपना समझना सरासर बेईमानी ही है। याद रखना यहाँ कोई किसी का नहीं। तुम चाहो तो लाख पकड़ने की कोशिश कर लो मगर यहाँ आपकी मुट्ठी में कुछ आने वाला नहीं है। अमानत की सार-सम्भाल तो करना मगर उसे अपना समझने की भूल मत करना और जो सचमुच तुम्हारा अपना है, इस दुनियां की चमक - दमक में उसे भी मत भूल जाना।

यह सच है कि इस दुनिया में कोई तुम्हारा अपना नहीं मगर दुनिया बनाने वाला जरुर अपना है फिर उस अपने से प्रेम न करना बेईमानी नहीं तो और क्या है ।

गर्मी में झुलस न जाए नाजुक त्वचा

फ्लेवनॉयड्स तथा एंटी ऑक्सीडैंट्स से स्वस्थ तथा चमकदार त्वचा सुनिश्चित बनाने में सहायता मिलेगी।

तेज गर्मी से त्वचा में झुलसन, पिगमेंटेशन और सन बर्न जैसी समस्याएं बढ़ने लगती हैं। गर्मी का मौसम आते ही अक्सर लोग अपनी त्वचा को लेकर बहुत चिंतित रहते हैं क्योंकि मौसम में बदलाव के साथ ही त्वचा पर इंफेक्शन होने की आशंका बढ़ जाती है। ऐसे में गर्मियों में त्वचा को विशेष देखभाल की जरूरत होती है। चिलचिलाती धूप और धूल भरी हवा से त्वचा की नमी खत्म हो जाती है। जिससे त्वचा शुष्क और मुरझाई सी बेजान हो जाती है। ऐसे मौसम में घर से बाहर निकलने पर कई सावधानियां बरतनें की जरूरत होती है। पानी- गर्मी के दिनों में हमारे शरीर का सारा पानी पसीने के रूप में निकल जाता है जिससे शरीर में पानी की कमी हो जाती है। पानी की कमी से डीहाइड्रेशन की समस्या बढ़ जाती है। इसलिये पानी की कमी ना हो इसलिये हमें भरपूर मात्रा में पानी पीना चाहिये। चेहरे में पड़ने वाले दाग-धब्बे, झुर्रियां और त्वचा में रूखापन होने के अलावा चेहरे की चमक चली जाती है। इससे बचाव के लिये जरूरी है कि आप भरपूर मात्रा में पानी पिएं। इसके साथ ही विटामिन सी से भरपूर फलों तथा हरी सब्जियों का प्रचुर मात्रा में सेवन करें। फ्लेवनॉयड्स तथा एंटी ऑक्सीडैंट्स से भरपूर भोजन से आपको स्वस्थ तथा चमकदार त्वचा सुनिश्चित बनाने में सहायता मिलेगी।

हमारे साथ हमारे पुराने जन्मों के संस्कार भी बंधे हैं

वैकुंठवासी जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज
संस्थापक-श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम

हमारे साथ पुराने जन्मों के संस्कार बंधे हुए हैं जिसके लिये मैं कह दिया करता हूं कि जीव तो सच्चा है, परम पवित्र है क्योंकि जीव परमात्मा का अंश है, उसका बेटा है।

'ईस्वर अंस जीव अविनासी'।

जीव मरता जन्मता रहता है, पर है परमात्मा का बेटा। उसके वंश के हैं, उसके अंश हैं हम लोग। पर हमें सत्संग की आवश्यकता क्यों पड़ गई? ऐसा विद्वान लोग तर्क कर देते हैं। यह जरूरत इसलिए पड़ गई कि हमारे जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों से काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मात्सर्य हमारे साथ जुड़ गये। इनको हम छोड़ नहीं पा रहे हैं। इनको छोड़े बिना यह जीव निर्मल नहीं हो सकता और **'निर्मल मन जन सो मोहिं पावा'**। निर्मल जन ही तो मुझे प्राप्त कर सकता है, वही तो मुझे प्रिय लगेगा और इनको छोड़े बिना मन निर्मल हो नहीं सकता, जिसके उपलक्ष्य में मैं सुना दिया करता हूं राजा वाली बात।

एक राजा के पुत्र को कंजर उठा कर ले गये। कंजरों ने अपनी बस्ती में ले जा कर उसे पालना शुरू कर दिया। कुछ समय के पालन पोषण के बाद वह अच्छा पहलवान हो गया, खा पी कर के मस्त हो गया उधर

बादशाह बहुत देर तक रोता रहा। उसकी नेत्र ज्योति भी जाती रही, अश्रुपात होते रहे–मेरा बेटा कहां चला गया? मर गया होगा। रानी भी रो-रोकर अन्धी हो गई। रुदन-क्रन्दन चल ही रहा था कि एक सन्त आये और कहने लगे कि आपका बेटा जीवित है। राजा बोला, कहां है? संत बोले, कंजरों की बस्ती में है। राजा बोला, मंत्री! तुरन्त चतुरंगणी सेना सजाओ और कंजरों की बस्ती को घेर लो। हमें अपना पुत्र चाहिये। मंत्री तो तैयार हो गये, पर महात्मा कहने लगे कि तुम ले तो आओगे उसको, पर यदि उसने कह दिया कि मैं तेरा बेटा ही नहीं हूं, तो आप क्या कर लोगे? क्या उसे मार दोगे? वह स्वीकार ही न करे तो? राजा बोले, हां, यह बात तो ठीक है। क्या करना चाहिये? सन्त बोले, पहले मैं जाऊंगा, कोशिश करूंगा, शायद मान जाये। वहां जाकर के संत जी बहुत दिनों तक सत्संग ही देते रहे। पर सत्संग में वह यही कहते रहे कि बेटा! तू चक्रवर्ती राजा का बेटा है। बोला, हे बाबा! तुझे अगर बस्ती के आस पास रहना है तो चुपचाप रह, बकवास करने की जरूरत नहीं है। कहने लगा कि बाबाजी! अगर तुझे रहना है तो चुपचाप रह ले और तूने फिर यह बात कही कि तू चक्रवर्ती राजा का बेटा है तो बाबा! तेरी गर्दन दबा दूंगा। संत बोले, अच्छा भाई! तेरी मर्जी है। कह तो हम ठीक रहे हैं, चाहे हाथ तोड़ दे, चाहे गर्दन दबा दे, पर हम जो कह रहे हैं ठीक कह रहे हैं। ऐसे ही कभी दूसरे दिन, कभी तीसरे दिन, कभी चौथे दिन, लगातार कहता ही रहा। एक दिन उस लड़के के दिमाग में आया कि वह बार-बार कह रहा है, कुछ तुझ से ले नहीं रहा, रोटी को तुझे कहता नहीं, कपड़े की तुझे बोलता नहीं और आज तक नमक तक भी तुझ से मांगा नहीं, जरूर कोई न कोई बात तो है। बोला, बाबा! बता दे मेरे बाप का क्या नाम है? बाबा बोला, नहीं बताता, पर है तू बादशाह का बेटा। अब वह लड़का दिन में कई बार आने लगा और यही पूछने लगा कि बाबा! मेरे पिता का नाम बता दे कि मैं कौन से महाराजा का बेटा हूं? संत बोला, मैं तेरे बाप का नौकर नहीं हूं, नहीं बताता। तुझे जो करना है सो कर ले। हम तो बाबा जी हैं, सोटी लंगोटी उठाकर चल देंगे, नहीं बताते। कहने का भाव यह है कि उसको व्यग्रता आ गई। मैं वही बोल रहा हूं, कि जब तक लक्ष्य में व्यग्रता नहीं आयेगी तब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी। इस तरह उसको व्यग्रता आ गई, तेजी आ गई और रुदन करने लग गया कि बाबा! बता दे, नहीं तो आज मैं जहर खा के मरूंगा, फांसी लगा कर मरूंगा। बाबा बोले, ठीक है, फिर तो बता देंगे। चल हमारे साथ। उसका मिलान करा दिया राजा से। राजा ने कहा, आ बेटे! मुझे खुशी मिली कि तू आ गया।

काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ रूपी कंजर हैं। यह जीव कंजरों की बस्ती में फंस गया। चक्रवर्ती सम्राट कौन हो सकता है? ॐ भूर्भुवः स्वः– आकाश पाताल और स्वर्ग में जो समान भाव से व्याप्त है, वही सम्राट हो सकता है। हम उसके बेटे हैं परन्तु इन कंजरों की बस्ती में आने से हम परमात्मा को भूल गये।

स्तंभ

जुलाई माह के पर्व

01 जुलाई (शनिवार)
– मासिक दुर्गाष्टमी
04 जुलाई (मंगलवार)
– देवशयनी एकादशी
05 जुलाई (बुधवार)
– गौरी व्रत प्रारम्भ गुजरात, वासुदेव द्वादशी
06 जुलाई (बृहस्पतिवार)
– प्रदोष व्रत, जयापार्वती व्रत प्रारम्भ
07 जुलाई (शुक्रवार)
– चौमासी चौदस
08 जुलाई (शनिवार)
– कोकिला व्रत गुजरात, पूर्णिमा उपवास
09 जुलाई (रविवार)
– व्यास पूजा, आषाढ़ पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, गौरी व्रत समाप्त गुजरात, अष्टाह्निका विधान पूर्ण
10 जुलाई (सोमवार)
– सावन प्रारम्भ उत्तर, श्रावण सोमवार व्रत उत्तर
11 जुलाई (मंगलवार)
– मंगला गौरी व्रत उत्तर
12 जुलाई (बुधवार)
– जयापार्वती व्रत समाप्त, संकष्टी चतुर्थी
16 जुलाई (रविवार)
– भानु सप्तमी, कालाष्टमी, कर्क संक्रान्ति
17 जुलाई (सोमवार)
– श्रावण सोमवार व्रत उत्तर
18 जुलाई (मंगलवार)
– मंगला गौरी व्रत उत्तर
19 जुलाई (बुधवार)
– कामिका एकादशी, मासिक कार्तिगाई
20 जुलाई (बृहस्पतिवार)
– गौण कामिका एकादशी, वैष्णव कामिका एकादशी, रोहिणी व्रत
21 जुलाई (शुक्रवार)
– प्रदोष व्रत, सावन शिवरात्रि
23 जुलाई (रविवार)
– श्रावण अमावस्या, दर्श अमावस्या, हरियाली अमावस्या, आदि अमावसाइ
24 जुलाई (सोमवार)
– चन्द्र दर्शन, श्रावण सोमवार व्रत
25 जुलाई (मंगलवार)
– मंगला गौरी व्रत
26 जुलाई (बुधवार)
– हरियाली तीज, विनायक चतुर्थी, अन्दल जयन्थी
27 जुलाई (बृहस्पतिवार)
– नाग पञ्चमी
28 जुलाई (शुक्रवार)
– कल्की जयन्ती, स्कन्द षष्ठी, ऋग्वेद उपाकर्म, यजुर्वेद उपाकर्म
29 जुलाई (शनिवार)
– गायत्री जापम
30 जुलाई (रविवार)
– भानु सप्तमी, तुलसीदास जयन्ती
31 जुलाई (सोमवार)
– मासिक दुर्गाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत

बाबा की पुण्यतिथि पर स्वास्थ्यजांच

श्री सिद्धदाता आश्रम एवं श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम के संस्थापक वैकुंठवासी स्वामी सुदर्शनाचार्य जी महाराज की पुण्यतिथि (22 मई) पर विशाल निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन हुआ। इसका उद्घाटन (2) परम पूज्य गुरुदेव श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी महाराज के साथ आरएसएस के हरियाणा प्रांत कार्यवाह श्री देवप्रसाद भारद्वाज जी ने किया। (3) डेंटल वैन का निरीक्षण करने के बाद (4) भक्तों को प्रवचन करते एवं (5) श्री भारद्वाज जी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते श्री गुरुदेव ।(6) सेवाभावी चिकित्सकों को सम्मानित करते एवं (7) जरूरतमंदों को कानों की मशीन प्रदान करते श्री भारद्वाज जी एवं भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्री संदीप जोशी जी। इसमें बत्रा हास्पिटल दिल्ली और वेणु आई संस्थान दिल्ली का सहयोग रहा।

Postal Regd. No. DL (E)-20/5031/16-18
Regd. under RNI No. DEL HIN/2003/11728
posted on 14 & 15 of every month

आश्रम में आगमन

गत दिनों (1) विश्व प्रसिद्ध रामकथा वाचक श्री मोरारी बापू जी, (2) असम के पूर्व मुख्यमंत्री श्री गेगोंग अपांग जी, (3) वृंदावन के बड़ा खटला के महंत श्री रामेश्वराचार्य जी, (4) मेघालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री उमानाथ सिंह जी, (5) हरियाणा के डीजीपी श्री बीएस संधू जी, (6) हरियाणा के एडीजीपी श्री आरसी मिश्रा जी एवं (7) मानव रचना शिक्षा संस्थान के चेयरमैन श्री डा प्रशांत भल्ला जी का श्री सिद्धदाता आश्रम में आगमन हुआ। पीठाधिपति श्रीमद जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज अपनी चिरपरिचित सरलता के साथ सभी से मिले।

ReSourceMedia (9891098549)

जनहित मानव कल्याण केंद्र के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रहलाद शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रोसेस, 794-795, गुरु रामदास नगर एक्सटेंशन, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092 से मुद्रित व ई-5 मेन रोड, पांडव नगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित। संपादक-शकुन रघुवंशी अवैतनिक